पारिवारिक जीवन

पारिवारिक जीवन के निर्माण और विकास के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान

पारिवारिक जीवन

पारिवारिक जीवन के निर्माण और विकास के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान

नक़ल-ए-हुरुफ़ी
सबा जबीं अब्बास

संपादन टीम
नजमा सिद्दीक़ी
इरफ़ान राशीदी
मोहम्मद आरीफ़
ख़ुर्रम इस्लाम क़ुरैशी

CPS International
centre for peace and spirituality

Goodword

First Published 2023

This book is copyright free and royalty free. It can be translated, reprinted, stored or used on any digital platform without prior permission from the author or the publisher. It can be used for commercial or non-profit purposes. However, kindly do inform us about your publication and send us a sample copy of the printed material or link of the digital work.
e-mail: info@goodwordbooks.com

CPS International
Centre for Peace and Spirituality International
1, Nizamuddin West Market, New Delhi-110013
e-mail: info@cpsglobal.org
www.cpsglobal.org

Goodword Books
A-21, Sector 4, Noida-201301
Delhi NCR, India
e-mail: info@goodwordbooks.com
www.goodwordbooks.com

Printed in India

विषय-सूची

घर का वातावरण 5
हर हाल में बेहतरी 6
आराम का स्रोत 7
महिला : जीवन की समर्थक 8
सबसे बड़ा वरदान 10
एक हदीस 11
'प्रमुखवाद' या 'बॉसवाद' 12
लैंगिक समानता 14
एक शादी या कई शादियाँ 15
जीवनसाथी के बीच पूर्ण अनुकूलता 16
बौद्धिक साथी 17
कंडीशनिंग को तोड़ना 19
आपसी विश्वास 20
बिना किसी मिशन के 21
एक उद्देश्यहीन जीवन 22
सादगी : जीवन का एक सिद्धांत 24
भावनात्मकता और अहंकार 25
प्रकृति से सहयोग 26
30 सेकंड का सूत्र 28
विफलता के प्रबंधन की कला 29
लाइफ़ मैनेजमेंट 30
प्रतीक्षा की पॉलिसी 32
घर : बेहतर इंसान बनाने की फ़ैक्ट्री 33
शिक्षा और महिला 35

सूरत या चरित्र 36
लव मैरिज नाकाम क्यों होती है? 37
ज़िद या संकल्प 39
छोटी-सी बात को बड़ी बात न बनाइए 40
हस्तक्षेप न करने की नीति 41
एक बुद्धिमान महिला 43
मायके की कल्पना में जीना 44
अप्राकृतिक इच्छा 45
मायके और सुसराल में अंतर 46
एक अवलोकन 48
माँ का ग़लत रोल 49
बच्चों की धार्मिक शिक्षा 50
लाड़-प्यार का नुक़सान 52
माता-पिता की भूमिका 53
एक घटना 54
बराबरी में विवाह 56
संयुक्त परिवार 57
सास-बहू की समस्या 58
महिला की महान भूमिका 59

घर का वातावरण

आजकल यह स्थिति हो गई है कि बाहर के जीवन में तो एक धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति (secular person) और एक धार्मिक व्यक्ति के बीच का अंतर दिखाई देता है, लेकिन गृहस्थ जीवन में यह अंतर दिखाई नहीं देता है। ज़ाहिर है कि दोनों के कपड़े अलग-अलग होते हैं। अगर एक धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति 'गुड मॉर्निंग' कहता है, तो एक धार्मिक व्यक्ति 'सलाम अलैकुम' कहता है। अगर एक धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति किसी क्लब में जाता है, तो एक धार्मिक व्यक्ति किसी मस्जिद आदि में जाता है, लेकिन यह अंतर बाहर के जीवन तक ही सीमित है। घर के अंदर के माहौल को देखें, तो धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति के घर और धार्मिक व्यक्ति के घर में कोई अंतर नहीं होगा और अगर कोई फ़र्क़ है भी, तो सिर्फ़ बाहरी होगा, हक़ीक़त में नहीं।

क़ुरआन में दोनों प्रकार के घरों की पहचान बताई गई है। किसी ग़ैर-मज़हबी इंसान के घर की पहचान क़ुरआन की सूरह नंबर 84 में बताई गई है— "वह अपने घरवालों में ख़ुश रहता है।" इसका अर्थ यह हुआ कि धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति का जीवन परिवार-केंद्रित जीवन (family-oriented life) होता है। वह अपने घर आता है और उसे लगता है कि वह अपने लोगों के बीच आ गया है। वह अपना सारा समय और पैसा अपने परिवार में लगाता है और संतुष्ट रहता है कि उसने अपने समय और पैसे का सही उपयोग किया है। वह अपने परिवार को देखकर ख़ुश होता है। उसके परिवार के सदस्य उसकी रुचियों और गतिविधियों का केंद्र होते हैं। जो लोग इस तरह जीते हैं, वे कभी भी ईश्वर के मनचाहे सेवक नहीं बन सकते, ईश्वर की अनंत दया में उनका कोई हिस्सा नहीं है।

धार्मिक व्यक्ति के घर की पहचान ईश्वर की किताब क़ुरआन की सूरह नंबर 52 की इस आयत से होती है— "स्वर्ग वाले कहेंगे कि इससे पहले हम अपने लोगों के बीच ख़ौफ़ में रहते थे।" इससे यह पता चलता है कि एक सच्चा धार्मिक व्यक्ति वह है, जो हर समय ईश्वर की पकड़ से डरता है, चाहे वह अपने घर के बाहर हो या अपने घर के अंदर। वह जवाबदेही (accountability) की मानसिकता में जीता है, निर्भय होकर नहीं।

हर हाल में बेहतरी

पति और पत्नी के बीच बेहतर रिश्ते की शिक्षा देते हुए क़ुरआन में कहा गया है— "महिलाओं के साथ अच्छी तरह जीवन गुज़ारो, अगर वे तुम्हें पसंद नहीं हैं, तो हो सकता है कि तुम्हें कोई चीज़ पसंद न हो, लेकिन ईश्वर ने इसमें तुम्हारे लिए एक बड़ी भलाई रख दी हो।"

यह बात पति और पत्नी दोनों के ही लिए सच है। इससे पता चलता है कि एक अच्छा समाज या एक अच्छा वैवाहिक जीवन इस बात पर निर्भर नहीं करता कि पति को बिलकुल अपनी पसंद की पत्नी मिले या पत्नी को बिलकुल अपनी पसंद का पति मिले।

सच तो यह है कि प्रकृति के नियम के अनुसार ऐसा हो नहीं पाता। एक सफल वैवाहिक जीवन का रहस्य जीवनसाथी के साथ अपनी पसंद के ख़िलाफ़ एडजस्ट करना है, नापसंद में पसंद का पहलू ढूँढना है।

महिलाएँ और पुरुष आम तौर पर एक आम समस्या से पीड़ित होते हैं। हर किसी को लगता है कि उन्हें जो पार्टनर मिला है या जो जीवन मिला है, वह उनकी चाहत से कम है। जो जीवन उसे मिला है,

उससे असंतुष्ट होकर प्रत्येक आदमी दूसरे कल्पित जीवन की तलाश में रहता है। यह अवधारणा अत्यधिक अवास्तविक (unrealistic) है। एक महिला या एक पुरुष, जो अपने मन में आदर्श जीवन लिये हुए है, अगर वह उसे मिल भी जाए, तब भी वह असंतुष्ट ही रहेगा।

याद रखें, सुखी जीवन ख़ुद आपके मन में है। आपके मन के बाहर ऐसा कोई सुखी जीवन मौजूद नहीं है। 'सोचने की कला' (art of thinking) सीखें और फिर हर जीवन आपके लिए आपकी पसंद का जीवन बन जाएगा। एक सुखी जीवन का निर्माण आदमी स्वयं करता है। कोई और नहीं है, जो आपको अपनी ओर से सुखी जीवन का उपहार दे सके।

आराम का स्रोत

क़ुरआन की सूरह नंबर 30 में कहा गया है—

"ईश्वर ने तुम्हारे लिए तुम ही में से जोड़े पैदा किए हैं, ताकि तुम उनसे आराम पा सको।" (अल-रूम, 21)

इस आयत में आराम का मतलब केवल वैवाहिक आराम या सुकून से नहीं है, बल्कि उससे भी ज़्यादा बेहतर आराम या सुकून है। इसका मतलब है जीवन का रोल निभाने के लिए एक शांतिपूर्ण साथी प्राप्त करना—

To find a peaceful partner for playing a greater role in life.

इस दुनिया में कोई बड़ा काम केवल सामूहिक प्रयास से ही हो सकता है। अकेला आदमी कोई बड़ा काम नहीं कर सकता। इस मिलन

का पहला और स्वाभाविक रूप शादी है, जिसमें एक महिला और पुरुष का मिलन यानी दो आत्माओं का मिलन सबसे सफल मिलन है। यह एकमात्र ऐसा इकट्ठा होना है, जिसमें मन की शांति और पूर्ण विश्वास के साथ एक-दूसरे के साथी बनते हैं।

विवाह के माध्यम से एक महिला और पुरुष का मिलन इस दुनिया में सबसे बड़ी कंपनी है। अगर लोगों को इस बात का एहसास हो, तो वे इसे एक बड़ा वरदान समझें और दोनों मिलकर इतना बड़ा काम करें, जो कोई दूसरी कंपनी नहीं कर सकती।

प्रकृति ने हर महिला और पुरुष को बेहतरीन क्षमता प्रदान की है। जो लोग भी संघर्ष की वांछित शर्त को पूरा करें, वे अपने-अपने क्षेत्र में बड़ी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। दुर्भाग्य से न तो पूर्वी और न ही पश्चिमी दुनिया असली रूप में महिलाओं की श्रेष्ठ भूमिका (बड़े रोल) की खोज कर सकी।

महिला : जीवन की समर्थक

क़ुरआन की सूरह नंबर 2 में पुरुष और महिला के रिश्ते के बारे में एक आयत है, जिसका मतलब है—

> "तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेतियाँ हैं। अपनी खेतियों में जिस तरह चाहो जाओ और अपने लिए आगे भेजो और ईश्वर से डरो और जान लो कि तुम अवश्य उससे मिलोगे और ईमानवालों को ख़ुशख़बरी दे दो।"
>
> And do good beforehand for yourself. (2:223)

इस आयत में 'अपने लिए आगे भेजो' मुख्य शब्द की हैसियत रखता है। इस शब्द से पूरी आयत का मतलब समझ में आता है। दूसरे शब्दों में, इस आयत का मतलब यह है कि तुम्हारा असल उद्देश्य यह होना चाहिए कि तुम वह काम करो, जो भविष्य में तुम्हारे लिए फ़ायदेमंद हो यानी आदमी इस इम्तिहान की वर्तमान दुनिया में इस तरह तैयारी करे कि वह मौत के बाद आने वाली दुनिया में एक सफल जीवन जी सके। यही हर इंसान का मुख्य उद्देश्य है। इस आयत में कहा गया है कि जीवन के उद्देश्य के संबंध में महिला के रोल को समझो। महिला को ईश्वर ने तुम्हारे लिए जीवन के सहायक के रूप में बनाया है, जैसे कि एक खेत किसी किसान के लिए उसके जीवन के उद्देश्य का समर्थन करता है।

जिस समय क़ुरआन की यह आयत अवतरित हुई (उतरी), उस समय मदीना (और बाक़ी दुनिया) में यह बहस छिड़ी हुई थी कि महिला का दर्जा इंसानी जीवन में क्या है? इस मामले में लोग अपने पिछले मानसिक मानचित्र के आधार पर केवल दो बातें जानते थे— शारीरिक संतुष्टि और अगली नस्ल। क़ुरआन में बताया गया है कि इस प्रकार के पहलुओं से अधिक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि एक महिला तुम्हारे लिए जीवन के निर्माण में एक सहायक की हैसियत रखती है, इसलिए तुम्हें चाहिए कि तुम इस प्राकृतिक सहायक का भरपूर उपयोग करो और इसे अपने जीवन का साधन बनाओ। महिला की इससे कम अवधारणा उसकी कमतर अवधारणा है। विवाह के रूप में पुरुष और महिला इसीलिए एक हो जाते हैं, ताकि इंसानियत के निर्माण में दोनों अपनी साझा भूमिका निभा सकें।

सबसे बड़ा वरदान

एक हदीस में पैग़ंबर मुहम्मद ने जो कहा, उसका मतलब यह है कि दुनिया की चीज़ों में सबसे अच्छी चीज़ एक नेक महिला है।
(सही मुस्लिम, हदीस नंबर 1467)

इसका मतलब यह है कि हर महिला जो जन्म लेती है, वह अपनी प्राकृतिक क्षमता (potential) के मामले में किसी पुरुष के लिए सबसे अच्छी जोड़ी होती है, लेकिन इसे वास्तविक (actual) घटना बनाना पुरुष का काम है। जिस तरह खनिज (iron ore) प्रकृति की देन है, पर इस लोहे को स्टील में बदलना आदमी का अपना काम है। यही हाल महिलाओं का भी है।

पुरुष का पहला कर्तव्य है— महिला का सम्मान करना। उसे उसके अंदर छुपी हुई प्रतिभा (talent) को पहचानना है और उसके आंतरिक सौंदर्य की खोज करना है। महिला के रूप में हर मर्द को एक उच्च प्राकृतिक क्षमता मिलती है। अब यह आदमी पर निर्भर करता है कि वह इसे संभव बनाए या उसे बरबाद कर दे।

यह काम यहाँ से आरंभ होता है, जब महिला किसी आदमी को पत्नी के रूप में मिले और वह उसे ईश्वर का भेजा हुआ उपहार समझे। जब वह अपनी पत्नी को ईश्वर की प्रत्यक्ष देन समझेगा, तो स्वाभाविक रूप से वह गंभीर हो जाएगा। वह यह समझेगा कि ईश्वर की पसंद ग़लत नहीं हो सकती। जिस तरह अन्य सभी सांसारिक मामलों में ईश्वर की पसंद सही है, उसी प्रकार यहाँ भी वह सही है। आदमी के अंदर जब यह ज़हन बनेगा, तो उसके बाद वह प्रक्रिया अपने आप शुरू हो जाएगी, जो महिला की संभावना (potential) को एक घटना बनाने के लिए ज़रूरी है। अपनी पत्नी को ईश्वर का उपहार मानने के बाद वह इसे अपने

लिए इबादत समझेगा। वह हर संभव क़ीमत चुकाने की कोशिश करेगा, ताकि उसकी पत्नी सही मायनों में उसके लिए दुनिया की सबसे अच्छी साथी बन जाए।

हर आदमी चाहता है कि उसे अच्छी पत्नी मिले, लेकिन अच्छी पत्नी रेडीमेड आइटम की तरह नहीं मिलती। यह काम पति को ही करना पड़ता है। इस सफलता के लिए आदमी में दो गुणों का होना आवश्यक है— सच्ची हमदर्दी और सब्र या धैर्य।

एक हदीस

वैवाहिक संबंधों के बारे में एक बड़ी सलाह के बारे में हदीस में वर्णन हुआ है। हज़रत अबू हुरैरा द्वारा वर्णित है कि ईश्वर के पैग़ंबर मुहम्मद ने कहा— कोई विश्वास करने वाला आदमी किसी विश्वास करने वाली महिला से घृणा न करे। अगर महिला का एक गुण उसे पसंद न हो, तो उसके अंदर कोई दूसरा गुण होगा, जो उसे पसंद हो। सच तो यह है किसी भी महिला या पुरुष में सभी अच्छे गुण नहीं पाए जाते। प्रकृति की यह व्यवस्था है कि अगर किसी में एक गुण है, तो दूसरा गुण नहीं है। उदाहरण के लिए, आम तौर पर यह देखा गया है कि अगर कोई महिला या पुरुष ज़्यादा आकर्षक है, तो वे आंतरिक विशेषताओं में कम होंगे और अगर किसी में आंतरिक गुण ज़्यादा होंगे, तो वे कम आकर्षक होंगे।

इंसान का यह मिज़ाज है कि वह किसी के नकारात्मक पक्ष (negative aspects) को अधिक देखता है, उसके सकारात्मक पहलू (positive aspects) अकसर उसकी दृष्टि से ओझल हो जाते हैं। यह

एक विनाशकारी मिज़ाज है। इस मिज़ाज की वजह से रिश्ते बिगड़ते हैं। इसके बजाय अगर सकारात्मक पक्ष पर ध्यान देकर और नकारात्मक पक्ष को नज़र-अंदाज किया जाए, तो रिश्ता अपने आप ही ख़ुशहाल हो जाएगा। ऐसा करने से हर पति अपनी पत्नी को सर्वश्रेष्ठ जीवनसाथी के रूप में देखेगा और हर पत्नी अपने पति को सर्वश्रेष्ठ जीवनसाथी के रूप में देख पाएगी।

ईश्वर ने किसी महिला या पुरुष को कम नहीं बनाया है। सच्चाई यह है कि हर महिला और हर पुरुष अपने आपमें एक संपूर्ण रचना है। यह हमारी अपनी समझ का दोष है कि हम किसी को कम और किसी को ज़्यादा समझते हैं। अगर महिला-पुरुष इस हक़ीक़त को जान लें, तो उनका जीवन कृतज्ञता (gratitude) का जीवन बन जाएगा, उनमें शिकायत या अभाव की भावना नहीं रहेगी और तब वे एक बेहतर जीवन का निर्माण कर सकेंगे।

'प्रमुखवाद' या 'बॉसवाद'

क़ुरआन की सूरह नंबर 4 (अल-निसा, 34) में यह कहा गया है—

"पुरुष महिलाओं के क़व्वाम हैं।" इसका मतलब यह नहीं है कि पुरुष महिलाओं पर हाकिम हैं। हाकिम शब्द के साथ विशिष्ट परंपराएँ जुड़ी हुई हैं। इस शब्द से यह अर्थ निकलता है कि एक शासक है और दूसरा अधीन, लेकिन 'क़व्वाम' का यह मतलब नहीं है। 'क़व्वाम' का मतलब केवल प्रबंधक होता है, न कि शासक या दूसरे से श्रेष्ठ। बॉस और बॉसवाद की अवधारणा आजकल एक प्रसिद्ध अवधारणा

है। 'क़व्वाम' के विषय को उसकी मिसाल से समझा जा सकता है। 'क़व्वाम' का सीधा-सा मतलब यह है कि आदमी घर में बॉस है और ठीक उसी तरह, जैसे किसी संगठन या कंपनी का एक बॉस होता है। यह बॉस कंपनी के लिए एक संगठनात्मक (organizational) आवश्यकता है, वह कंपनी का शासक नहीं है। कहा जाता है कि बॉस हमेशा सही होता है। इसका मतलब यह नहीं है कि बॉस दूसरे से बेहतर है। यह सिद्धांत केवल इसलिए है, क्योंकि एक संगठन में जब तक एक व्यक्ति को प्राधिकरण (authority) के रूप में नहीं माना जाता है, तब तक संगठन सफलतापूर्वक नहीं चल सकता है।

इसी प्रकार घर भी एक संस्था है। इस संस्था को सफलतापूर्वक चलाने के लिए एक संगठनात्मक प्राधिकरण (organizational authority) आवश्यक है। क़ुरआन में इसी पहलू से आदमी को 'क़व्वाम' कहा गया है। किसी घर का 'क़व्वाम' उसके बराबर के सदस्यों में व्यवस्थापक (administator) का दर्जा रखता है। इस नियम को न मानने का परिणाम सिर्फ़ यह होता है कि हर घर अराजकता (anarchy) का शिकार होकर रह जाता है।

बॉसवाद एक ज़िम्मेदारी है, श्रेष्ठता की उपाधि नहीं। इसी प्रकार 'क़व्वाम' भी एक ज़िम्मेदारी है, इसका अर्थ एक की दूसरे पर श्रेष्ठता नहीं है। यह प्रशासनिक आवश्यकता का मामला है, न कि श्रेष्ठता का मामला। अगर व्यावहारिक (practical) आवश्यकता और सैद्धांतिक सम्मान (principled respect) के बीच के अंतर को पूरी तरह से समझ लिया जाए, तो 'क़व्वाम' और 'क़व्वामत' के मुद्दे को समझना आसान हो जाएगा।

लैंगिक समानता

मैं दिल्ली में एक सेमिनार में एक रिटायर्ड जज से मिला। उन्होंने कहा— "मौलाना साहब, आप जानते हैं कि इस्लाम की सबसे कमज़ोर कड़ी क्या है? वह यह है कि इस्लाम लैंगिक समानता में विश्वास नहीं करता। इस तरह की अवधारणा आज के इंसान के लिए बिलकुल स्वीकार्य (acceptable) नहीं हो सकती। आज का युग लैंगिक समानता का युग है, जबकि इस्लाम लैंगिक असमानता की बात करता है।"

यह आजकल बहुत कहा जाता है, लेकिन इसके पीछे कोई गहरा विचार नहीं है। हक़ीक़त यह है कि जिसे लैंगिक असमानता कहा जाता है, वह लैंगिक अंतर का मामला है, न कि लैंगिक असमानता का मामला। हमारी पूरी दुनिया अंतर के इसी सिद्धांत पर आधारित है। पुरुष और महिला के मामले को इस सामान्य नियम से अलग नहीं किया जा सकता।

'अंतर' कोई नकारात्मक (negative) चीज़ नहीं है, बल्कि यह पूरी तरह से एक सकारात्मक (positive) चीज़ है। यह 'अंतर' एक कार के दो पहियों जैसा है। एक पहिया दूसरे पहिये से अलग नहीं है, बल्कि एक पहिया दूसरे पहिये का पूरक है। पुरुषों और महिलाओं के मामले में यही होता है। प्रकृति ने पुरुषों और महिलाओं के बीच जैविक और मनोवैज्ञानिक अंतर पैदा किया है। यह अंतर इसलिए है कि दोनों एक-दूसरे के लिए बेहतर जीवनसाथी बनें और दोनों एक-दूसरे के पूरक (complementary) की भूमिका निभाएँ।

लैंगिक समानता (gender equality) की अवधारणा एक अप्राकृतिक अवधारणा है। यह पति-पत्नी के बीच अनावश्यक विवाद पैदा करती है। इसके विपरीत लैंगिक अंतर की अवधारणा एक प्राकृतिक

अवधारणा है। यह जीवनसाथी के बीच सहयोग की भावना पैदा करती है। यह जीवन को गाड़ी के दो पहियों की तरह एक साथ सफलतापूर्वक चलाने में सक्षम बनाती है।

एक शादी या कई शादियाँ

क़ुरआन की सूरह नंबर 4 में एक पुरुष को चार महिलाओं से शादी करने की इजाज़त दी गई है (अन-निसा, 3)। इसका मतलब यह नहीं कि चार शादियों को खुले तौर पर इजाज़त है। हक़ीक़त यह है कि यह एक असाधारण आदेश है, सामान्य आदेश नहीं। सामान्य नियम यह है कि एक पुरुष को केवल एक बार शादी करनी चाहिए, लेकिन जब वास्तविक आवश्यकता हो, तो एक पुरुष एक से अधिक यानी दो या तीन या चार शादी कर सकता है।

यह आवश्यकता केवल एक ही कारण से उत्पन्न होती है और वह यह है कि किसी दुर्घटना के कारण समाज में महिलाओं की संख्या अधिक (सरप्लस) हो जाए और महिलाओं की तुलना में पुरुषों की संख्या घट जाए। ऐसी स्थिति में 'मोनोगैमी' (एक पत्नीवाद) के सिद्धांत को अपनाने का मतलब होगा कि समाज में कई महिलाएँ बिना पति के रह जाएँगी।

किसी समाज में जब महिलाओं की संख्या पुरुषों से अधिक हो जाए, तो यह एक नाज़ुक स्थिति होती है। उस समय चुनाव एक शादी और अनेक शादियों के बीच नहीं होता, बल्कि चुनाव एक शादी और लैंगिक अराजकता (sexual anarchy) के बीच होता है। ऐसे में समाज को लैंगिक अराजकता से बचाने के लिए 'बहुपत्नीवाद' (polygamy)

के सिद्धांत को अपनाने और एक आदमी को कई शादियाँ करने की अनुमति देने के अलावा कोई रास्ता नहीं होता।

सच्चाई यह है कि शादी का प्राकृतिक तरीक़ा है— एक महिला और एक पुरुष। एक महिला का दूसरी महिला (पति की दूसरी पत्नी) के प्रति स्वाभाविक रूप से नकारात्मक भाव होता है। यह घटना यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि एक शादी की पद्धति प्राकृतिक पद्धति है और बहुपत्नीवाद एक असाधारण अनुमति है, जिसकी अनुमति आवश्यकता के क़ानून के तहत दी जाती है। इस तरह के असाधारण क़ानून जीवन के हर मामले में होते हैं, लेकिन असाधारण क़ानून केवल एक असाधारण क़ानून है, इसे सामान्य क़ानून का दर्जा नहीं दिया जा सकता है।

जीवनसाथी के बीच पूर्ण अनुकूलता

शादी के बाद जब एक महिला और एक पुरुष एक-दूसरे के साथी बनते हैं, तो यह मिलन पूरे ब्रह्मांड में सबसे अनोखी घटना है। विशाल ब्रह्मांड में अनगिनत चीज़ें हैं। यहाँ अधिकांश चीज़ें जोड़े के रूप में हैं, लेकिन किन्हीं दो चीज़ों के बीच वह पूर्ण अनुकूलता (complete compatibility) नहीं है, जो एक महिला और पुरुष के बीच पाई जाती है। जब एक महिला और एक पुरुष जीवनसाथी के रूप में एक-दूसरे से मिलते हैं, तो ऐसा लगता है कि दोनों सोची-समझी योजना से एक-दूसरे के लिए बनाए गए थे।

अगर पति-पत्नी के बीच यह चेतना जीवित हो, तो दोनों एक-दूसरे को पाकर धन्य हो जाएँगे। दोनों रोमांच के स्तर पर एक-दूसरे को

अपने लिए वरदान मानेंगे। यह रोमांच इतना शक्तिशाली होगा, जो कभी उनका साथ न छोड़ेगा। दोनों एक साथ ऐसे रहेंगे, जैसे उन्हें अपनी सबसे प्रिय वस्तु मिल गई हो। दोनों हमेशा सकारात्मक भाव में जीने लगेंगे।

अगर दुनिया में केवल महिलाएँ होतीं और पुरुष नहीं होते, इसी तरह अगर केवल पुरुष होते और महिलाएँ नहीं होतीं, तो ऐसे संसार में जीवन तो प्रतीत होता, पर वह ख़ुशी से ख़ाली होता। ऐसे संसार में हर तरफ़ एक ऐसी कमी का एहसास छाया रहेगा, जो कभी और किसी हाल में समाप्त नहीं होगा। केवल पुरुषों की दुनिया भी एक अर्थहीन दुनिया है और केवल महिलाओं की दुनिया भी एक अर्थहीन दुनिया है। वर्तमान दुनिया इसलिए एक अर्थपूर्ण दुनिया है, क्योंकि यहाँ महिला और पुरुष दोनों हैं।

अगर महिला-पुरुष मिलकर इस हक़ीक़त पर विचार करें, तो उन्हें उससे भी अधिक ख़ुशी होगी, जितनी एक वैज्ञानिक को किसी नई चीज़ की खोज से मिलती है। एक-दूसरे के ख़िलाफ़ शिकायत करना उन्हें बेमानी लगने लगेगा। यहाँ हक़ीक़त यह है कि महिला और पुरुष दोनों ही सृष्टि की उत्कृष्ट कृतियाँ (noble creation) हैं। शादी का अर्थ है दो रचनात्मक उत्कृष्ट कृतियों का मिलन। संपूर्ण ज्ञात ब्रह्मांड (known universe) में इससे बड़ी कोई दूसरी घटना नहीं है।

बौद्धिक साथी

इंसान जब जन्म लेता है, तो वह कच्चे लोहे के समान होता है। यह प्रकृति से पैदा हुआ इंसान है। उसके बाद के सभी कार्य व्यक्ति को स्वयं करने होते हैं। प्रकृति लोहे के खनिज का उत्पादन करती है। फिर इसे स्टील में बदलना या मशीन बनाना आदमी का अपना काम है।

आत्म-सुधार की इस स्वाभाविक प्रक्रिया में बौद्धिक विकास (intellectual development) सबसे महत्वपूर्ण है। व्यक्तित्व के निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रत्येक इंसान को अपनी बुद्धि को विकसित बुद्धि बनाना चाहिए। उसे अपनी चेतना को जगाकर अपनी बुद्धि को पूर्ण करना चाहिए।

इस प्रक्रिया में मूल रूप से तीन चीज़ों की आवश्यकता होती है— अध्ययन, अवलोकन (observation) और अन्य इंसानों के साथ बौद्धिक आदान-प्रदान (intellectual exchange)। पुस्तकें अध्ययन का प्रमुख स्रोत हैं। इसी प्रकार अवलोकन (observation) का सबसे बड़ा स्रोत प्रकृति है। विचारों के आदान-प्रदान के संबंध में यह आवश्यक है कि व्यक्ति में दूसरों से सीखने की प्रवृत्ति हो। वह सभी के साथ सीखने की प्रक्रिया जारी रखे।

प्रत्येक पति के लिए उसकी पत्नी और प्रत्येक पत्नी के लिए उसका पति सीखने की प्रक्रिया में क़रीबी बौद्धिक भागीदार (intellectual partner) होते हैं। इस लिहाज़ से वैवाहिक जीवन एक बेहतरीन मौक़ा है। वैवाहिक जीवन के रूप में प्रत्येक महिला और पुरुष अपने लिए एक बौद्धिक साथी पा लेते हैं, जिसके माध्यम से वे अपने मानसिक विकास की प्रक्रिया को बिना किसी रुकावट के जारी रख सकते हैं।

बौद्धिक विकास हर महिला और पुरुष की एक अनिवार्य आवश्यकता है। वैवाहिक जीवन के माध्यम से दोनों एक ऐसे बौद्धिक साथी को पा लेते हैं, जो हर समय उपलब्ध रहता है। मानसिक विकास की इस प्रक्रिया के सफल होने की एक ही शर्त है कि दोनों मानसिक विकास के महत्व को समझें और इसे अपने दैनिक जीवन में सर्वोच्च प्राथमिकता दें।

कंडीशनिंग को तोड़ना

शादी के बाद जब एक महिला और पुरुष एक साथ होते हैं, तो यह कोई साधारण बात नहीं होती। यह दो अलग-अलग व्यक्तित्वों का एक साथ जमा होना है। उनमें से प्रत्येक दूसरे से अलग होता है। एक शब्द में, महिला 'मिस कंडीशंड' है और पुरुष 'मिस्टर कंडीशंड' है।

यह स्वाभाविक बात है कि जब महिला या पुरुष का जन्म होता है, तो दोनों की कंडीशनिंग उनके पर्यावरण के आधार पर शुरू हो जाती है। घर के वातावरण और घर के बाहर के वातावरण दोनों के प्रभाव के कारण हर एक धीरे-धीरे एक कंडीशंड माइंड बन जाता है। हर एक के ऊपर उसका कंडीशंड माइंड इस क़द्र छा जाता है कि हर कोई अपने-अपने ख़ोल में रहने लगता है। हर एक सोचने लगता है कि वह सही है और दूसरा ग़लत। इस छाप को 'कंडीशनिंग' कहा जाता है। कंडीशनिंग का यह मामला बिना किसी अपवाद के सभी के साथ होता है।

ऐसे में जब एक महिला और पुरुष एक साथ होते हैं, तो दोनों एक-दूसरे के लिए समस्या बन जाते हैं। महिला अपनी कंडीशनिंग के कारण एक चीज़ को हरे रंग में देखती है और पुरुष अपनी कंडीशनिंग के कारण उसी चीज़ को नीले रंग में देखता है। इसी अंतर के आधार पर दोनों में बार-बार मतभेद होते रहते हैं, जो धीरे-धीरे ज़्यादा बढ़ जाते हैं।

इस समस्या का एकमात्र समाधान 'डी-कंडीशनिंग' है और 'डी-कंडीशनिंग' का एकमात्र तरीक़ा एक-दूसरे के साथ खुले दिमाग़ से चर्चा करना है। दोनों एक-दूसरे के साथ नियमित रूप से बौद्धिक आदान-प्रदान करें, साथ ही दोनों में मतभेद को स्वीकार करने का भाव (acceptance) बहुत ज़रूरी है यानी सच सामने आने के तुरंत बाद उसे स्वीकार करना और तुरंत यह कहना कि "इस मामले में मैं ग़लत था (I was wrong)।"

अपनी ग़लती को खुले तौर पर स्वीकार करना ही ख़ुद को 'डी-कंडीशंड' करने का एकमात्र सफल तरीक़ा है।

आपसी विश्वास

जब दो इंसान एक साथ मिलकर काम करते हैं, तो सफल परिणाम के लिए उनके बीच पूर्ण विश्वास होना आवश्यक है। दोनों हर पहलू से एक-दूसरे पर पूरा भरोसा रखते हों। दोनों के बीच अलगाव की कोई दीवार बाक़ी न रहे। पति-पत्नी के बीच आपसी विश्वास का यह सिद्धांत बेहद ज़रूरी है। इसके बिना कोई भी घर अच्छा घर नहीं बन सकता।

पति-पत्नी के बीच ऐसा क्यों होता है कि आपसी विश्वास विकसित नहीं हो पाता, दोनों के बीच अलगाव की एक अदृश्य दीवार लगातार बनी रहती है। इस अवांछनीय स्थिति की ज़िम्मेदारी महिला और पुरुष दोनों पर समान रूप से है। महिला की ग़लती यह होती है कि वह शादी के बाद अपने मन को नई परिस्थितियों के अनुकूल नहीं बना पाती। वह अपने मायके को अपना घर मानती रहती है। यह उसके व्यवहार में बार-बार व्यक्त होता है। उदाहरण के लिए, जब वह अपने मायके का ज़िक्र करेगी, तो वह 'मेरे घर में ऐसा था' या 'मेरे घर में ऐसा होता है' कहेगी और यह बात स्वाभाविक रूप से पुरुष को बुरी लगती है। उसे जाने-अनजाने ऐसा लगता है कि उसके और उसकी पत्नी के बीच एक तरह का अलगाव मौजूद है, जो किसी तरह ख़त्म नहीं होता।

दूसरी ओर पुरुष के अंदर आम तौर पर एक कमज़ोरी होती है, जो वांछित प्रकार के आपसी विश्वास के लिए एक निरंतर बाधा बनी रहती है। वह यह कि हर पुरुष के मन में एक काल्पनिक महिला होती है, यह काल्पनिक विचार पुरुष के मन में निरंतर रहता है। इस कारण वह अपनी

विद्यमान पत्नी के साथ वांछित प्रकार का आपसी विश्वास स्थापित नहीं कर पाता। पति-पत्नी के बीच आपसी विश्वास स्थापित करने के लिए यह आवश्यक है कि दोनों स्वयं को सुधारें। दोनों अपने आपको उपरोक्त प्रकार के जुनून से बाहर निकालें। दोनों को काल्पनिक दुनिया में रहने के बजाय व्यावहारिक परिस्थितियों के आधार पर अपना मन बनाना चाहिए। जब वे ऐसा करेंगे, तो दोनों के बीच आपसी विश्वास ख़ुद ही स्थापित हो जाएगा।

बिना किसी मिशन के

एक बार मुझे एक पढ़े-लिखे मुसलमान के घर रहने का अवसर मिला। वे मुसलमान 'दावाह* मिशन' (Dawah Mission) से सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे। मुझे पता चला कि उनकी एक बेटी है। उन्होंने शादी तो कर ली, लेकिन ससुराल में निबाह न कर सकीं। वे अपने पति को छोड़कर अपने माता-पिता के पास आ गईं। मैंने उस लड़की से कहा कि आपको एक फ़ैसला लेना पड़ेगा। आप इस तरह जीवन नहीं गुज़ार सकतीं। इंसान को हमेशा जीने के लिए एक मिशन की आवश्यकता होती है। आपके पास केवल दो में से एक विकल्प है। वर्तमान मामले में आप तीसरा विकल्प ले रही हैं और तीसरा विकल्प निश्चित रूप से कोई विकल्प नहीं है।

इंसान मिशन के बिना नहीं रह सकता। जब एक महिला वैवाहिक जीवन अपनाती है, तो यह धीरे-धीरे उसके लिए एक मिशन बन जाता है— घर का रख-रखाव और बच्चों की शिक्षा और प्रशिक्षण आदि।

* ईश्वर का संदेश पहुँचाने का काम।

उस दुनिया में वह अपनी एक स्थायी हैसियत की मालिक होती है। यहाँ उसकी ख़ुद की बनाई हुई एक 'जागीर' होती है और इस एस्टेट को चलाना उसका आजीवन मिशन बन जाता है।

मैंने कहा कि आप या तो अपने पति के पास वापस जाएँ और वहाँ अपने लिए एक दुनिया बनाएँ। आपके पास एक अन्य विकल्प यह है कि आप अपने पिता के साथ 'दावाह मिशन' को अपने जीवन का मिशन बना लें। यह भी आपके लिए एक मुमकिन विकल्प है, लेकिन इसके लिए आपको ख़ुद को फिर से तैयार करना होगा। आप अपना अध्ययन बढ़ाएँ, अपनी जीवन-शैली बदलें, अपने जीवन को फिर से प्लान करें। आप अपनी प्राथमिकताओं पर फिर से विचार करें और उन्हें नए सिरे से सेट करें।

अगर आप ऐसा करती हैं, तो आपको एक पूर्ण जीवन प्राप्त हो जाएगा। अगर आपके पति के पास एक पारिवारिक संपत्ति होती, तो आपके पिता के साथ आपका दावती काम एक संपत्ति बन जाएगा। मैंने कहा कि अभी आप जो कर रही हैं, वह सिर्फ़ भावनाओं पर आधारित है। आप भावनाओं के साथ लंबे समय तक नहीं रह सकतीं। इस तरह आप बहुत जल्दी निराशा का शिकार हो जाएँगी और इंसान के लिए निराशा से बुरी कोई चीज़ नहीं।

एक उद्देश्यहीन जीवन

अपनी एक यात्रा में मैं एक शिक्षित मुसलमान से मिला। वे अपनी पत्नी के साथ रह रहे थे। उनका घर काफ़ी बड़ा था, लेकिन उसमें दो के अलावा और कोई व्यक्ति नहीं था। ज़ाहिर है कि सजे-धजे घर के अंदर

दो बेहद सादे लोग रह रहे थे। बातचीत के दौरान पता चला कि उनकी एक बेटी और एक बेटा है। उन्होंने उन दोनों को अच्छी शिक्षा दी, लेकिन शिक्षा पूरी करने के बाद दोनों बाहर चले गए। दोनों अब विदेश में रह रहे हैं और संभवत: वहीं के नागरिक बन गए हैं। मैंने महिला से पूछा कि क्या आपको बच्चों की याद आती है। उन्होंने कहा कि हमें यह सोचकर ख़ुशी होती है कि हमारे बच्चे जहाँ हैं, वहाँ ख़ुश हैं।

ऐसे बहुत-से जोड़े हैं, जिन्होंने उत्सुकता से अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दी, लेकिन जब बच्चे शिक्षित हो जाते हैं, तो वे बाहर चले जाते हैं। अब ये लोग अपने शानदार घरों में शानदार जीवन जी रहे हैं। उनके पास बीते दिनों की यादों के अलावा कुछ नहीं है। यह कहानी अकसर उन लोगों के साथ होती है, जो आर्थिक रूप से संपन्न माने जाते हैं। ऐसा लगता है कि इन लोगों ने पैसे कमाकर अपने लिए सफलता की एक दुनिया बना ली है, लेकिन जल्द ही इनकी उम्मीदों की दुनिया बिखर जाती है, क्योंकि इन्होंने अपने जीवन में कोई स्थायी लक्ष्य नहीं बनाया था। उनका एकमात्र लक्ष्य बच्चों को ख़ुश करना था। बाद में जब बच्चों ने उनका साथ छोड़ दिया, तो उनके सामने जीवन का कोई उद्देश्य बाक़ी न रहा।

लक्ष्य वह है, जो स्वयं से संबंधित है, किसी के रहने या न रहने से इसमें कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता है। एक महिला और एक पुरुष शादी करते हैं और अपनी दुनिया बनाने में सक्षम हो जाते हैं, लेकिन अवास्तविक प्रेम के परिणामस्वरूप वे अपने बच्चों को अपनी आशाओं का केंद्र बना लेते हैं। बच्चों की शिक्षा और प्रशिक्षण माता-पिता की ज़िम्मेदारी है, न कि उनके जीवन का उद्देश्य। अगर माता-पिता इस अंतर को समझ लें तो वे उसी के अनुसार अपने जीवन की योजना बनाएँगे और फिर वे कभी भी निराशा के शिकार नहीं होंगे।

सादगी : जीवन का एक सिद्धांत

मेरे अनुभव में लगभग सभी माता-पिता सादगी को जीवन-सिद्धांत के रूप में नहीं जानते हैं। मजबूरी में वे सादगी का तरीक़ा तो अपना लेते हैं, लेकिन अपनी मर्ज़ी से वे सादगी का तरीक़ा नहीं अपनाते। माता-पिता का यह रवैया उनके बच्चों तक पहुँचता है, यहाँ तक कि उनके बच्चे भी सादगी को जीवन के सिद्धांत के रूप में नहीं जान पाते और फिर जीवनभर उन्हें इसकी भारी क़ीमत चुकानी पड़ती है।

सादगी क्या है? सादगी इंसान के लिए यह जानना है कि उसके जीवन का उद्देश्य क्या है और वह इस उद्देश्य को अपने जीवन में प्राथमिक महत्व दे। उसे बाक़ी सब कुछ दूसरे दर्जे पर रखना चाहिए।

जीवन में हर किसी के लिए सबसे ज़रूरी यह है कि वह अपने भीतर एक उच्च व्यक्तित्व का निर्माण करे। सृष्टिकर्ता की ओर से हर पुरुष और महिला को उच्च क्षमता (potential) दी जाती है, लेकिन यह प्रत्येक महिला और पुरुष पर निर्भर है कि वह इस क्षमता को वास्तविक बनाए। क्षमता देना विधाता का काम है, लेकिन क्षमता को हक़ीक़त बनाना हमेशा इंसान का काम होता है।

इस मामले में पहली बात यह है कि हर महिला और हर पुरुष अपनी क्षमता का पता लगाए। इसके बाद हर एक को यह करना है कि वह अपने जीवन की योजना एक उद्देश्यपूर्ण आधार पर बनाए। अध्ययन और अनुभव के माध्यम से अपनी बुद्धि का विकास करे। वह टाइम मैनेजमेंट को जाने। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपने सभी साधनों का उपयोग करे।

उद्देश्यपूर्ण जीवन एक जीवन-शैली है। इस जीवन-शैली को सफलतापूर्वक अपनाने के लिए सादगी बिलकुल ज़रूरी है। सादगी

आदमी को अपने धन या अपने संसाधनों को अनावश्यक चीज़ों में लगाने के नुक़सान से बचाती है, वरना फिर वह लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अधिक प्रभावी ढंग से संघर्ष नहीं कर पाता है। इस मामले में लापरवाही सभी के लिए विनाशकारी है।

भावनात्मकता और अहंकार

जब एक महिला और एक पुरुष शादी में एक साथ हो जाते हैं, तो यह दो विपरीत व्यक्तित्वों का मिलन होता है। महिला जन्म से भावुक होती है और पुरुष जन्म से अहंवादी (egoist)। ये दोनों बातें स्वाभाविक हैं। वे अनिवार्य रूप से हर महिला और हर पुरुष के व्यक्तित्व का हिस्सा हैं। इस मामले में किसी का कोई अपवाद नहीं है।

इन दोनों गुणों का एक सकारात्मक पहलू है, तो दूसरा नकारात्मक पहलू। अगर इन गुणों का सकारात्मक रूप से उपयोग किया जाए, तो वे इंसानियत के लिए अच्छे होंगे और अगर उनका नकारात्मक तरीक़े से उपयोग किया जाए, तो वे इंसानियत के लिए नुक़सानदेह बन जाएँगे।

अहंकार का सकारात्मक पहलू यह है कि यह व्यक्ति के भीतर किसी लक्ष्य के लिए जमने की प्रवृत्ति पैदा करता है। अगर आदमी में यह गुण नहीं हो, तो वह मोम के समान हो जाएगा और वह कोई भी कार्य पूरे संकल्प के साथ नहीं कर पाएगा। अहंकार का नकारात्मक पहलू यह है कि व्यक्ति में घमंड की भावना विकसित हो जाती है। आदमी को चाहिए कि अपने अहंकार को इस नकारात्मक सीमा तक न जाने दे, अन्यथा वह एक रचनात्मक व्यक्ति के बजाय एक विनाशकारी व्यक्ति बन जाएगा।

इसी तरह महिलाएँ पैदाइशी तौर पर भावुक होती हैं। इस विशेषता के भी सकारात्मक और नकारात्मक पहलू हैं। इस विशेषता का सकारात्मक पहलू यह है कि इसके कारण महिला में काफ़ी कोमलता और करुणा होती है, जो निस्संदेह एक गुण है। इस विशेषता का नकारात्मक पहलू यह है कि इससे महिला में ज़िद्दी मिज़ाज पैदा हो जाता है। वह मामलों में हठ दिखाने लगती है। अगर यह नकारात्मक मनोदशा एक महिला में विकसित हो जाए, तो उसकी प्राकृतिक विशेषता अपना सकारात्मक लाभ खो देगी।

पुरुष और महिला, दोनों को चाहिए कि वे अपने इस प्राकृतिक स्वभाव को समझें। उन्हें सचेत रूप से इसका प्रयत्न करना चाहिए, ताकि उनका मूड सकारात्मक घेरे में रहे, वह नकारात्मक दिशा न ले। इस अनुशासन में ही महिला और पुरुष दोनों की सफलता का रहस्य छिपा है।

प्रकृति से सहयोग

एक सज्जन ने कहा कि जब मैं अपने घर जाता हूँ, तो मेरी पत्नी मेरे विरुद्ध कुछ कठोर वचन बोल देती है। इस पर मुझे गुस्सा आ जाता है और मैं भी कुछ बोल देता हूँ और फिर दोनों के बीच झगड़ा हो जाता है। मेरे घर में अकसर ऐसे झगड़े होते रहते हैं। इस समस्या का समाधान क्या है?

मैंने कहा कि इस समस्या का एक ही समाधान है और वह है एकतरफ़ा सब्र यानी अगर आपकी पत्नी आपके ख़िलाफ़ बोलती है,

तो भी आपको उसके ख़िलाफ़ नहीं बोलना है। आपको सभी स्थितियों में एकतरफ़ा मौन का तरीक़ा अपनाना है। उन्होंने कहा कि ऐसा क्यों? आख़िर मैं ही एकतरफ़ा चुप क्यों रहूँ, उन्हें भी तो चुप रहना चाहिए। यह न्याय का मामला नहीं हुआ।

मैंने कहा कि यह न्याय की बात नहीं है, बल्कि व्यावहारिक समाधान की बात है। महिला पैदाइशी तौर पर भावुक होती है। अकसर ऐसा होता है कि वह किसी भी चीज़ से अधिक प्रभाव लेती है। अब उसे अपनी भावनाओं को बाहर निकालने के लिए किसी की ज़रूरत होती है। यह स्त्री की स्वाभाविक आवश्यकता होती है। ऐसे में महिला का पति सबसे क़रीबी व्यक्ति होता है, जिसके सामने वह अपनी भावनाओं को प्रकट कर सकती है और ख़ुद को फिर से संयत कर सकती है।

ऐसे समय में आदमी को इसे अहंकार का मामला नहीं बनाना चाहिए, बल्कि सहयोग की भावना से कार्य करना चाहिए। ऐसे में अगर पुरुष बचने (avoidance) का तरीक़ा अपनाता है, तो मानो उसने सहयोग का तरीक़ा अपनाया है। इसके अलावा उसका सहयोग केवल महिला के साथ नहीं है, बल्कि प्रकृति के साथ भी होता है। प्रकृति के नियम के तहत स्त्री इस तरह के भाव प्रकट करने के लिए बाध्य है। इसलिए जब आदमी ऐसे अवसर पर सहयोग का ढंग अपनाता है, तो उसके लिए यह उपासना (इबादत) का एक अवसर होता है अर्थात् उसने प्रकृति की स्थापित व्यवस्था को स्वेच्छा से स्वीकार किया। निस्संदेह यह एक ऐसा मामला है, जिसके लिए उसे ईश्वर के यहाँ पुरस्कृत किया जाएगा।

30 सेकंड का सूत्र

पुरुष स्वभाव से अहंकारी होता है और महिला स्वभाव से भावुक होती है। इसी अंतर की वजह से दोनों के बीच अकसर झगड़ा हो जाता है। दोनों के बीच के इस अंतर को मिटाया नहीं जा सकता। इस समस्या का एक ही समाधान है और वह यह है कि जब पुरुष का अहंकार भड़के, तो स्त्री को चुप हो जाना चाहिए और जब महिला की भावना भड़क जाए, तो पुरुष को चुप हो जाना चाहिए। दोनों में से किसी को भी प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए। इसके अलावा इस समस्या का कोई और समाधान संभव नहीं है।

हर नकारात्मक भाव, जैसे क्रोध आदि के साथ मामला यह है कि जब यह भड़कता है, तो अपने आप भड़क जाता है, लेकिन शुरू में यह एक सीमा के भीतर रहता है। सीमा से आगे जाने के लिए ज़रूरत होती है कि कोई बढ़ावा देने वाला उसे बढ़ावा दे। यह बढ़ावा देने वाला ख़ुद कोई इंसान होता है। अगर इंसान अपनी तरफ़ से बढ़ावा न दे, तो हर नकारात्मक भाव कुछ समय बाद अपने आप ख़त्म हो जाएगा। नकारात्मक भाव के बारे में प्रकृति का यह नियम है कि वह पैदा होने के बाद 30 सेकंड के लिए ऊपर जाता है। उसके बाद अगर उसे और बढ़ावा नहीं मिला, तो 30 सेकंड के बाद वह स्वाभाविक रूप से नीचे जाने लगता है।

प्रकृति के इस नियम को पति-पत्नी दोनों के लिए समझना ज़रूरी है, जिसे हमने 30 सेकंड का फ़ॉर्मूला कहा है। प्रकृति के इस नियम को जानना ही वैवाहिक जीवन में सफलता का सबसे बड़ा रहस्य है। इस नियम को जानने वाले पति-पत्नी के जीवन में कभी भी ऐसा संकट (crisis) नहीं आएगा, जो टूटने (breakdown) की ओर ले जाए।

विधाता ने प्रकृति में सभी आवश्यक सुरक्षा उपाय रखे हैं। एक महिला या पुरुष को बस इतना करना है कि प्रकृति में पहले से मौजूद इन उपायों को जानना है और उनका अपने व्यावहारिक जीवन में उपयोग करना है। प्रकृति का तरीक़ा मौन भाषा में बोलना है। जो मौन भाषा को सुनने की क्षमता रखते हैं, वे लोग प्रकृति की इस वाणी को सुनेंगे और इसका लाभ उठाकर अपना जीवन सफल बनाएँगे।

विफलता के प्रबंधन की कला

एक उद्योगपति अपनी बेटी को लेकर मेरे पास आए। उन्होंने कहा कि मेरी बेटी की शादी की तारीख़ तय हो गई है। वे जल्द ही शादी करने वाली हैं। कृपया प्रार्थना करें कि उनका वैवाहिक जीवन सफल हो। मैंने उनकी बात सुनी और फिर मेरे मुँह से निकला—

असफलता को सफलता में बदलने की कला जानने वाले को छोड़कर हर शादी का असफल होना निश्चित है।

Every marriage is doomed for failure except forthe One who knows the art of failure management.

मतलब यह कि हर शादी का असफल होना तय है, सिवा उसके जहाँ पति-पत्नी असफलता को सफलता में बदलने की कला जानते हों। उन्होंने कहा कि फिर वह कला हमें बताएँ। मैंने कहा कि कला यह है कि आदमी शादी को आदर्श (ideal) नज़रिये से न देखे, बल्कि व्यावहारिक (practical) नज़रिये से देखे और फिर जो शादी हो जाए, उसी को मुमकिन समझकर उसे स्वीकार कर ले। शादी के बाद सामान्य तौर पर ऐसा होता है कि लोग अपने जोड़े की आदर्श से तुलना करते

हैं। चूँकि आदर्श कभी नहीं प्राप्त होता है, उन्हें लगता है कि उन्हें सही जीवनसाथी नहीं मिला। शादी के दोनों पक्ष इस भावना से पीड़ित रहते हैं। परिणाम यह होता है कि वे शादी के नाम पर एक साथ तो आ जाते हैं, लेकिन वे कभी भी शादी के सुख का अनुभव नहीं कर पाते।

सच तो यह है कि हर महिला वही होती है, जैसे दूसरी महिलाएँ होती हैं। इसी तरह हर आदमी वही होता है, जैसे दूसरा आदमी। यद्यपि बाहरी दिखावे के मामले में लोग एक-दूसरे से भिन्न होते हैं, लेकिन आंतरिक व्यक्तित्व के मामले में सभी की स्थिति समान होती है। अगर लोग इस हक़ीक़त को जानेंगे, तो हर आदमी को लगेगा कि उसे जो पत्नी मिली है, वह दुनिया की सबसे अच्छी पत्नी है। इसी तरह हर महिला को लगेगा कि उसे जो पति मिला है, वह दुनिया का सबसे अच्छा पति है। जब उन दोनों को इस सत्य का पता चल जाएगा, तब उनका जीवन निराशा और दुख से मुक्त हो जाएगा और तब वे उस सुखी जीवन को जी सकेंगे, जिसकी उन्हें तलाश थी।

लाइफ़ मैनेजमेंट

इस दुनिया में एक सफल जीवन जीने के लिए ज़रूरी है कि आदमी उस कला को जाने, जिसे 'आर्ट ऑफ़ लाइफ़ मैनेजमेंट' (art of life management) कहा जाता है। 'आर्ट ऑफ़ लाइफ़ मैनेजमेंट' यह है कि आदमी एक ओर ख़ुद अपने आपको जाने और दूसरी ओर अपने से बाहर की परिस्थितियों को समझे और फिर अपने जीवन की योजना बनाए। फिर उस पर इस प्रकार कार्य करे कि वह परिणाम को देखते हुए बार-बार अपनी योजना को देखे और चेक करता रहे।

जीवन की किसी भी योजना के सही या ग़लत होने की एक ही कसौटी होती है और वह है उसका परिणाम। जिस योजना का परिणाम सही न निकले, वह ग़लत योजना है और जिस योजना का परिणाम सही निकले, वह सही योजना है। आदर्शवादी मानदंड पर किसी योजना को मापना नासमझी है। बुद्धिमानी यह है कि अपने बनाए हुए मानचित्र को उसके परिणाम की रोशनी में जाँचा जाए।

वैवाहिक जीवन के संबंध में भी यही नियम एक सही नियम है। वैवाहिक जीवन की नज़ाकत यह है कि यह बिना ख़ून के रिश्ते की बुनियाद पर बना होता है। जहाँ दो व्यक्तियों के बीच ख़ून का रिश्ता (blood relation) होता है, वहाँ किसी सचेत योजना के बग़ैर भी संबंध बनते हैं, लेकिन पति-पत्नी का रिश्ता ख़ून के रिश्ते के आधार पर स्थापित नहीं होता है। ऐसे रिश्ते को सही ढंग से निभाने की एक ही रणनीति है और वह है इसे पूरी तरह से अक़्ल के अधीन रखा जाए, न कि भावनाओं के अधीन।

ख़ून के रिश्ते भावनात्मक रिश्ते होते हैं। यह भावनात्मक संबंध हर चीज़ का बदल बन जाता है, लेकिन एक ऐसा रिश्ता, जो ख़ून का रिश्ता न हो, उसकी सफलता पूरी तरह से इस बात पर निर्भर करती है कि इसे सोच-समझकर अच्छी तरह से चलाया जाए। ख़ून के रिश्ते प्राकृतिक ज़ोर पर बने रहते हैं, लेकिन जो रिश्ते खून के न हों, उनमें इस प्रकार का प्राकृतिक ज़ोर नहीं होता। जो रिश्ते ख़ून के न हों, वे तर्कयुक्त मैनेजमेंट (rational management) के बग़ैर मुमकिन नहीं। ख़ून के रिश्ते प्रकृति द्वारा स्थापित होते हैं और ग़ैर-ख़ून के रिश्ते चेतना द्वारा।

प्रतीक्षा की पॉलिसी

'प्रतीक्षा करो और देखो' (wait and watch) एक पुरानी कहावत है। यह सिर्फ़ एक सूक्ति नहीं है, बल्कि यह प्रकृति का एक नियम है। प्रतीक्षा की नीति एक बेहतर अंत का स्वागत करना है। एक चीज़, जो आपको आज नहीं मिली, उसे पाने के लिए अगर आप कल का इंतज़ार करें, तो यह बड़ी बुद्धिमानी की बात होगी। बहुत मुमकिन है कि जो आज नहीं मिला, वह कल आपको पूरे मनचाहे रूप में मिल जाए।

वैवाहिक जीवन में पति-पत्नी दोनों ही यह ग़लती करते हैं कि वे अपने साथी को आज ही वैसा देखना चाहते हैं, जैसा कि वह उसके मन में बसा हुआ है। इस मामले में वे समय नामक कारक (time factor) को नहीं देख पाते। हालाँकि समय से पहले कुछ नहीं मिलता। महिलाओं और पुरुषों दोनों को पता होना चाहिए कि इस दुनिया में यह संभव नहीं है कि जो चीज़ आपको कल मिलने वाली है, वह आपको आज मिल जाए। विवाह के बाद जब महिला और पुरुष एक साथ एक घर में आते हैं, तो यह दोनों के लिए एक नया अनुभव होता है। स्वाभाविक रूप से दोनों एक-दूसरे से सीखना चाहते हैं और स्वाभाविक रूप से दोनों एक-दूसरे के अनुकूल बनना चाहते हैं। यह प्राकृतिक प्रक्रिया शादी के पहले दिन से ही शुरू हो जाती है। दोनों का काम इस प्राकृतिक प्रक्रिया को जारी रखने में मदद करना है। उन्हें ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहिए, जिससे इस प्राकृतिक प्रक्रिया में बाधा आए।

प्रतीक्षा का उद्देश्य इस प्राकृतिक प्रक्रिया में सहायता करना है। प्रतीक्षा का उद्देश्य यह है कि यह प्राकृतिक प्रक्रिया बिना रुके चलती रहे, जब तक कि यह अपनी अंतिम सीमा तक न पहुँच जाए। प्रतीक्षा करना एक सामान्य नियम है। वह हर बड़ी उपलब्धि से जुड़ा हुआ है। पति और पत्नी के मामले में भी यही सिद्धांत सही है। केवल इंतज़ार कीजिए और

फिर आप जो चाहते हैं, वह आपको ज़रूर मिलेगा। यह प्रकृति का नियम है और इस दुनिया में प्रकृति के क़ानून से बड़ा कोई क़ानून नहीं है।

घर : बेहतर इंसान बनाने की फ़ैक्ट्री

माँ के रूप में एक महिला की भूमिका आने वाली पीढ़ी की तैयारी है। इंसानियत एक बहती हुई नदी के समान है, जिसमें पुराना जल बहकर चला जाता है और नया जल उसकी जगह ले लेता है। यही मामला इंसानी कारवाँ का है। यहाँ भी निरंतर ऐसा होता है कि पिछली पीढ़ी जाती रहती है और नई पीढ़ी उसकी जगह लेती रहती है। माँ का काम इस नई पीढ़ी की तैयारी है। माँ की ज़िम्मेदारी यह है कि वह अगली पीढ़ी को हर बार एक बेहतर इंसान बनाकर भेजे।

बेहतर इंसान कौन है? बेहतर इंसान वह है, जिसमें जीवन जीने का साहस है, जो नकारात्मक (negative) सोच से ऊपर हो और सकारात्मक (positive) सोच रखता हो, जो रचनात्मक आधार पर जीवन की योजना बनाने में सक्षम हो, जो अपने समाज के लिए प्रॉब्लम न बने। कोई ऐसी समस्या पैदा न करे, जो आपके समाज को देने वाला सदस्य(giver member) हो,न कि केवल लेने वाला सदस्य।

ऐसे मामले में माँ को क्या करना चाहिए? इसे हम कुछ उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करेंगे। इन उदाहरणों का सारांश यह है कि माँ को चाहिए कि वह अपने बच्चों में वह चीज़ पैदा करे, जिसे परिपक्वता (maturity) कहते हैं, उसे अपने बच्चों को अपरिपक्वता (immaturity) से समाज में न भेजें।

आम तौर पर यह माना जाता है कि एक धनी परिवार में पैदा हुआ व्यक्ति भाग्यशाली होता है और जो व्यक्ति ग़रीब के घर में जन्म लेता है, वह दुर्भाग्यशाली कहलाता है। यहाँ माँ की भूमिका यह है कि अगर

उसका बच्चा ग़रीब घर में पैदा होता है, तो उसे यह बताना चाहिए कि ग़रीब होना अभाव का विषय नहीं है। ऐसी माँ को चाहिए कि वह अपने बच्चे को जीवन का यह फ़लसफ़ा सिखाए कि अगर अमीर बच्चे के पास धन है, तो ग़रीब बच्चे के पास उससे भी बड़ा धन है और वह है— प्रोत्साहन (incentive)। यह प्रेरणा उसकी जीवन-शक्ति बन जाती है और उसका समर्थन करती है।

अगर कोई अमीर व्यक्ति अपने मुँह में चाँदी का चम्मच लेकर पैदा होता है, तो ग़रीब व्यक्ति अपने मुँह में प्रोत्साहन का चम्मच लेकर पैदा होता है।

माँ को अपने बच्चे को बताना चाहिए कि हर अमीर बच्चे के पिता और दादा ग़रीब ही थे, फिर वे मेहनत करके अमीर बने। इसी तरह तुम भी मेहनत करके सब कुछ हासिल कर सकते हो।

आम तौर पर इंसानों को वंचित और ग़ैर-वंचित (Haves and Have-nots) में विभाजित किया जाता है, लेकिन यह एक ग़लत विभाजन है। यह एक और बौद्धिक भ्रांति है और एक माँ को चाहिए कि वह अपने बच्चे को इस भ्रम से बाहर निकाले।

हम देखते हैं कि बचपन में एक व्यक्ति वंचित वर्ग का सदस्य होता है, लेकिन बाद में वह ग़ैर-वंचित वर्ग का सदस्य बन जाता है। उदाहरण के लिए सी०वी० रमन, जी०डी० बिरला, ओबेरॉय, धीरूभाई अंबानी, डॉ. अब्दुल कलाम आदि। ऐसे हज़ारों लोग हैं, जो बचपन में वंचित वर्ग से थे, लेकिन बाद में वे ग़ैर-वंचित वर्ग के कुलीन सदस्य बन गए। अतः इस दुनिया में सही द्विभाजन वंचित और ग़ैर-वंचित का नहीं है, बल्कि क्षमता का है और इस क्षमता को वास्तविक बनाने का है (potential haves and actual haves)।

किसी व्यक्ति के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है— हौसला और सकारात्मक चेतना। पिछली पीढ़ी का कर्तव्य है कि वह अपनी

अगली पीढ़ी को साहसी और जागरूक बनाकर जीवन के क्षेत्र में प्रवेश कराए।

शिक्षा और महिला

शिक्षा का महत्व जितना पुरुषों के लिए है, उतना ही उसका महत्व महिलाओं के लिए भी है। शिक्षा के बिना दोनों ही अधूरे हैं। शिक्षा हर महिला और पुरुष की एक ऐसी ज़रूरत है, जिसे दोनों में से कोई भी नज़र-अंदाज़ नहीं कर सकता। शिक्षा को नज़र-अंदाज़ करना अपने लिए यह ख़तरा मोल लेना है कि वह अपनी ज़िंदगी की ऊँचाइयों तक न पहुँचने का जोखिम उठाए, वह वांछित ऊँचाइयों तक पहुँचे बिना असफलता की भावना के साथ मर जाए।

महिला और पुरुष दोनों के लिए शिक्षा इतनी ज़रूरी है कि इस मामले में कोई बहाना स्वीकार्य नहीं है। इस मामले में प्रसिद्ध कहावत है—

अगर आपके पास कोई अच्छा बहाना है, तब भी उसका उपयोग न करें।

If you have a good excuse, don't use it.

शिक्षा का महत्व केवल नौकरी (job) के लिए नहीं है, बल्कि इसका महत्व बेहतर जीवन के निर्माण के लिए है। वर्तमान समय में हर चीज़ ज्ञान और शिक्षा से संबंधित है। ऐसे में कोई भी महिला या पुरुष शिक्षा से वंचित नहीं रह सकता, क्योंकि शिक्षा से वंचित होने का अर्थ है— ऐसा व्यक्ति बनना, जो वास्तविक जीवन गुज़ारने के क़ाबिल न हो।

हर इंसान एक जानवर है। जो चीज़ उसे पशुता के स्तर से इंसान के स्तर तक उठाती है, वह अक़्ल और शिक्षा है। एक जानवर और

एक इंसान के बीच जो अंतर है, वह शिक्षा है। शिक्षा इंसान को अपने व्यक्तित्व में छिपी उच्च क्षमता (potential) का उपयोग करके अपनी क्षमता को वास्तविक (actual) बनाने में सक्षम बनाती है। शिक्षा के बिना यह काम कभी नहीं हो सकता।

शिक्षा का मतलब सिर्फ़ व्यावसायिक शिक्षा (professional education) नहीं है, बल्कि वास्तविक शिक्षा (actual education) है। शिक्षा का अर्थ है— स्वयं को ज्ञान और बुद्धिमत्ता की दुनिया तक पहुँचाना। व्यावसायिक शिक्षा केवल इंसान को नौकरी देती है, लेकिन ज्ञान और बुद्धिमत्ता इंसान को मानवता के उच्च स्तर तक पहुँचाती है।

सूरत या चरित्र

ज़्यादातर युवा ख़ूबसूरत पत्नी पाने का सपना देखते हैं, लेकिन यह सिर्फ़ एक अज्ञानता है। एक तथाकथित ख़ूबसूरत महिला अकसर एक समस्या बन जाती है। ऐसी महिला की दिलकशी केवल कुछ दिनों की होती है, उसके बाद सारी दीवानगी ख़त्म हो जाती है। सच तो यह है कि शादी के मामले में आदमी को चरित्र (character) को वास्तविक महत्व देना चाहिए। जिस महिला का चरित्र अच्छा होता है, वही सबसे अच्छी पत्नी होती है।

फ्रैंकफर्ट विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिक डॉ. जोहान ओकर्ट (Dr Johan Ockert) ने एक समीक्षा में बताया कि ज़्यादा सुंदर लड़कियाँ आम तौर पर जीवन में असफल हो जाती हैं।

Gorgeous women feel that beauty is the only asset, and they cannot bear the ageing. Marilyn Monroe, one

of the prettiest women to emerge from Hollywood, is stated to have wept bitterly when she saw first traces of wrinkles in the mirror.

ख़ूबसूरत महिलाओं को लगता है कि सुंदरता ही उनकी एकमात्र संपत्ति है और वे बुढ़ापे को सहन नहीं कर पातीं। मर्लिन मुनरो हॉलीवुड की सबसे सुंदर महिलाओं में से एक थीं। कहा जाता है कि जब उसने आईने में झुर्रियों के पहले निशान देखे, तो वह फूट-फूटकर रो पड़ी।

जिस पुरुष को आकर्षक महिला नहीं मिलती, वह अधिक भाग्यशाली होता है, क्योंकि एक अनाकर्षक महिला व्यावहारिक जीवन में एक बेहतर साथी साबित होती है। शादी का उद्देश्य कोई खिलौना प्राप्त करना नहीं है, बल्कि शादी का उद्देश्य पुरुष के लिए उपयोगी जीवनसाथी प्राप्त करना है और सबसे अच्छा जीवनसाथी वही है, जो सिर्फ़ दिखने में ही नहीं, बल्कि चरित्र में भी बेहतर हो। यह अनुभव इतना सामान्य है कि हर आदमी अपने आस-पास के लोगों में इसका उदाहरण देख सकता है, बशर्ते उसमें चीज़ों को वास्तविक रूप से देखने की क्षमता हो।

लव मैरिज नाकाम क्यों होती है?

आधुनिक युग में जब लव मैरिज का तरीक़ा प्रचलित हुआ, तो अधिकांश महिलाओं और पुरुषों का मानना था कि अब उन्होंने शादी के मामले में अंतिम सूत्र खोज लिया है। अब हर महिला और पुरुष के लिए लव मैरिज के माध्यम से अपनी पसंद से शादी करना और फिर अपनी पसंद के अनुसार अपने लिए बेहतर जीवन का निर्माण करना

संभव है, लेकिन अनुभव बताता है कि लव मैरिज का तरीक़ा पूरी तरह से असफल साबित हुआ है। आजकल सारी दुनिया में लड़के-लड़कियाँ अपनी पसंद से लव मैरिज करते हैं, लेकिन सर्वे के मुताबिक पचास फ़ीसदी से ज़्यादा शादियाँ असफल हो जाती हैं। लव मैरिज ने लोगों को सुखी वैवाहिक जीवन का उपहार नहीं दिया।

लव मैरिज की असफलता का कारण क्या है? लव मैरिज अप्राकृतिक शादी का एक फैंसी नाम है। होता यह है कि एक युवती और एक युवक एक-दूसरे को देखते हैं और बाहरी ख़ुशनुमाई के कारण वे एक-दूसरे को पसंद कर लेते हैं, लेकिन फिर जब दोनों के बीच व्यावहारिक संबंध स्थापित हो जाता है, तो उन्हें पता चलता है कि जिस चमकदार चीज़ को वे सोना समझते थे, वह सोना थी ही नहीं।

सच तो यह है कि शादी से पहले जो प्रेम-प्रसंग (love affair) होता है, वह केवल भ्रम पर आधारित होता है। शादी के बाद जब दोनों के बीच व्यावहारिक रिश्ता बनता है, तो मृगतृष्णा (mirage) ख़त्म हो जाती है और वास्तविक स्थिति सामने आ जाती है। यही वजह है कि शादी से पहले जो असाधारण लगता था, शादी के बाद वह महज़ एक मामूली चीज़ बनकर रह जाती है। अब मायूसी का दौर शुरू होता है, जो आख़िरकार तलाक़ या फिर दूरी की ओर ले जाता है।

लड़के और लड़कियों के लिए एक ही सही तरीक़ा है कि वे शादी की बात अपने माता-पिता पर छोड़ दें। हालाँकि इस मामले में माता-पिता को अपने बच्चों की इस बारे में राय लेनी चाहिए और उसके बाद ही कोई अंतिम फ़ैसला लेना चाहिए।

ज़िद या संकल्प

अपनी एक पश्चिमी यात्रा के दौरान मैं एक ईसाई महिला से मिला। उन्होंने कहा कि मेरे पति ज़िद्दी (stubborn) हैं। इसके लिए मुझे क्या करना चाहिए? मैंने कहा कि यह कोई वास्तविक समस्या नहीं है, यह केवल सोचने की समस्या है। आपको अपनी सोच को सही करना चाहिए और फिर यह समस्या अपने आप दूर हो जाएगी। ऐसा मत सोचिए कि आपका पति ज़िद्दी है। ज़िद्दी एक नकारात्मक (negative) शब्द है। अगर आप किसी चीज़ के बारे में नकारात्मक रूप से सोचते हैं, तो उसके बारे में सामान्य तरीक़े से सोचना संभव नहीं है। इसके बजाय आपको इसके बारे में सकारात्मक (positive) शब्दों का प्रयोग करना चाहिए, ताकि आप जो कुछ भी सोचें, सकारात्मक ज़हन से सोचें, न कि नकारात्मक ज़हन के तहत।

मैंने कहा कि आपको कहना चाहिए कि आपके पति में दृढ़ संकल्प (determination) का गुण है। जब वे किसी चीज़ के बारे में सोचते हैं, तो वे अटूट तरीक़े से सोचते हैं। यह एक मर्दाना विशेषता है और यह निस्संदेह एक अच्छा गुण है। इस गुण के बिना आदमी जीवन की चुनौतियों का साहस के साथ सामना नहीं कर सकता और जो आदमी चुनौती (challenge) का सामना नहीं कर सकता, वह जीवन में कभी सफल नहीं हो सकता।

उक्त महिला कई भाषाएँ जानती थी और वह पेशे से इंटरप्रेटर (interpreter) थी। मैंने कहा कि आपका प्रोफ़ेशन कोई चैलेंजिंग प्रोफ़ेशन नहीं है। इस पेशे में नरमी बरतना अच्छी बात माना जाता है। आपका सौम्य व्यवहार आपके पेशे के अनुरूप है, लेकिन आपके पति एक मल्टीनेशनल कंपनी में मैनेजर हैं। ईश्वर ने आपको कोमल बनाया

है, ताकि आप अपना पेशा सफलतापूर्वक निभा सकें। इसके विपरीत ईश्वर ने आपके पति को उनके पेशे के लिए आवश्यक शक्ति प्रदान की है। आपको इस वितरण के लिए शुक्र करना चाहिए, न कि शिकायत।

मामलों को सकारात्मक पक्ष (positive way) पर सोचने से यह इंसान को सकारात्मक निष्कर्ष (positive results) की ओर ले जाता है और नकारात्मक पक्ष (negative way) पर सोचने से उसे नकारात्मक निष्कर्ष (negative results) की ओर ले जाता है।

यही बात वैवाहिक जीवन पर भी लागू होती है। इस सिद्धांत को जानना निस्संदेह इस संसार में सफल जीवन की कुंजी है।

छोटी-सी बात को बड़ी बात न बनाइए

पति-पत्नी के बीच अकसर छोटी-छोटी बातों पर झगड़े होते हैं। वे अकसर छोटी बातों पर शुरू होते हैं और असहमति बढ़ते-बढ़ते बड़ी बात बन जाती है। विवाद की असली वजह एक पुरुष और एक महिला का पति-पत्नी के रिश्ते में दिन-रात एक साथ रहना है। अगर ये दोनों कुछ समय के लिए मिलें, उदाहरण के लिए, किसी यात्रा पर या किसी सेमिनार में, तो उनके बीच कभी भी इस प्रकार का झगड़ा नहीं होगा। झगड़ा हमेशा एक आम-सी बात पर चिड़चिड़ाहट का नतीजा होता है।

अगर पति-पत्नी इस बात को जान लें, तो उसके बाद कभी भी उनके बीच गंभीर रूप से कोई मतभेद नहीं होगा। इस हक़ीक़त की बेख़बरी के कारण ऐसा होता है कि दोनों ही इस अंतर को वास्तविक (real) भेद समझ लेते हैं, हालाँकि वह सिर्फ़ एक सापेक्षिक (relative) अंतर ही होता है।

हर महिला और पुरुष का स्वभाव प्राकृतिक रूप से एक-दूसरे से अलग होता है। यह भेद हमेशा बना रहता है। वक़्ती मुलाक़ातों में यह कभी समस्या नहीं बनता, लेकिन जब एक महिला और पुरुष स्थायी रूप से एक साथ रहने लगते हैं, तो ये मतभेद बार-बार प्रकट होते हैं और फिर धीरे-धीरे गंभीर हो जाते हैं। अगर महिलाओं और पुरुषों को यह एहसास हो जाए कि यह एक मनोवैज्ञानिक समस्या है, वास्तविक नहीं, तो वे तुरंत इसे अनदेखा कर देंगे, ठीक वैसे ही, जैसे वे डेटिंग में ऐसी बातों को नज़र-अंदाज़ करते थे।

इसी बेखबरी के कारण प्रत्येक महिला और पुरुष का जीवन एक विरोधाभासी मनोवृत्ति का शिकार रहता है। वे अपने घर के अंदर लड़ते-झगड़ते रहते हैं, लेकिन जब यही लोग घर से बाहर की दुनिया में आते हैं, तो लोगों के साथ उनका रवैया काफ़ी सामान्य हो जाता है। जीवनसाथी को इस विरोधाभासी व्यवहार से ख़ुद को बचाना चाहिए। उसके बाद उनके घर का जीवन भी उसी प्रकार संयमित हो जाएगा, जैसे बाहर का जीवन संयमित हो गया है। जीवन में अधिकांश समस्याएँ नासमझी के कारण उत्पन्न होती हैं। अपने आपको जागरूक करें और अपने आपको अनावश्यक समस्याओं से बचाएँ।

हस्तक्षेप न करने की नीति

मैंने एक पढ़े-लिखे व्यक्ति से पूछा कि आपका वैवाहिक जीवन कैसा है— सुखी है या दुखी। उन्होंने कहा कि मैं कह सकता हूँ कि मेरी शादीशुदा ज़िंदगी काफ़ी ख़ुशहाल है। मेरे घर का माहौल सामान्य है। हमारे बीच कोई लड़ाई नहीं है। मैंने पूछा कि आपके इस सुखी जीवन

का फ़ॉर्मूला क्या है? उन्होंने कहा कि एक शब्द में कहा जाए, तो यह फ़ॉर्मूला हस्तक्षेप न करना है। मैं अपनी पत्नी के मामलों में दख़ल नहीं देता और न ही मेरी पत्नी मेरे मामलों में दख़ल देती है।

मैंने कहा कि वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाने का यह उत्तम सिद्धांत है, क्योंकि विधाता ने हर महिला और पुरुष को अलग-अलग मिज़ाज का बनाया है— हर मर्द को 'मिस्टर डिफरेंट' और हर औरत को 'मिस डिफरेंट'। हर इंसान के स्वभाव में यह अंतर विधाता ने बनाया है, इसलिए हम इसे बदलने में सक्षम नहीं हैं। हमें इस अंतर को बदलने का व्यर्थ प्रयास नहीं करना चाहिए, बल्कि इस अंतर से निपटने का प्रयास करना चाहिए। इस सिद्धांत को एक शब्द में 'अंतर प्रबंधन की कला' (art of difference management) कहा जा सकता है।

यह अंतर बुरा नहीं है। इस अंतर में एक बड़ा फ़ायदा है। अंतर का मतलब सिर्फ़ अंतर नहीं है, बल्कि इसका मतलब दो अलग-अलग क्षमताओं का होना है। यह अच्छी बात नहीं होगी, अगर महिला और पुरुष दोनों ही हर मामले में एक जैसे हों। अनुरूपता न होना मानसिक विकास का रहस्य है, इसीलिए कहा गया है—

जब सब एक जैसा सोचते हैं, तो कोई बहुत ज़्यादा नहीं सोचता।

When everyone thinks alike, no one thinks very much.

हस्तक्षेप न करने की नीति साथ रहने के लिए सर्वोत्तम नीति है। यह पॉलिसी घर के बाहर के जीवन के साथ-साथ घर के अंदर के जीवन के लिए भी अच्छी है।

एक बुद्धिमान महिला

महाराष्ट्र (भारत) के एक परिवार की घटना मेरी जानकारी में आई। एक लड़की की शादी उसकी मर्ज़ी से एक पढ़े-लिखे मुसलमान से कर दी गई। दोनों साथ रहने लगे। उनके यहाँ एक लड़का भी पैदा हुआ, लेकिन जल्द ही दोनों के बीच मतभेद होने लगे। बात बिगड़ती चली गई, यहाँ तक कि लड़की अपने पति से नाराज़ हो गई और अपनी माँ के पास अपने घर चली गई और अपनी माँ से पति के ख़िलाफ़ शिकायत करने लगी। यह सुनकर माँ ने कहा— "शादी एक बार होती है, बार-बार शादी नहीं होती। इसलिए या तो तुम अपने पति के साथ निबाह करो या ज़हर खाकर मर जाओ।"

लड़की के प्रति उसकी माँ की प्रतिक्रिया उसकी उम्मीदों के बिलकुल विपरीत थी। यह उत्तर सुनकर वह रोने लगी और कुछ दिन वहीं रही। उसकी माँ ने कहा— "चाहे तुम कितना भी रोओ, मैंने तुम्हें अपना जवाब दे दिया है। मेरा जवाब बदलने वाला नहीं है।"

माँ का जवाब लड़की के लिए किसी विस्फोट से कम नहीं था, लेकिन इस विस्फोटक जवाब ने लड़की में एक नई सोच पैदा कर दी। इस बीच लड़की को मेरी किताब 'राज़-ए-हयात' मिली। उन्होंने यह किताब पढ़ी। किताब पढ़ने के बाद उन्हें एहसास हुआ कि इस मामले में उनकी माँ ने जो कहा था, वह सही था। मुझे अपने पति के साथ रहना है। अब मेरे लिए कोई दूसरा विकल्प नहीं है।

इस तरह वह लड़की कुछ दिनों तक ऐसा ही सोचती रही। अंत में उसने फ़ैसला किया कि मुझे अपने पति के पास वापस जाना चाहिए और वह बिना किसी शर्त अपने पति के पास चली गई और वहीं रहने लगी। मैंने स्वयं अपनी एक यात्रा के दौरान देखा है कि अब दोनों पति-

पत्नी ख़ुशी से साथ-साथ रह रहे हैं। दोनों एक-दूसरे के 'सक्सेसफुल लाइफ़ पार्टनर' बन चुके हैं।

असहमति रबड़ की तरह होती है। आप चाहे तो इसे खींचें और चाहे न खींचें और इसे इसकी प्राकृतिक अवस्था में छोड़ दें।

मायके की कल्पना में जीना

पूर्वी (eastern) महिलाओं मे एक स्वभाव बहुत आम है। शादी के बाद वे ससुराल आ जाती हैं, लेकिन मानसिक रूप से वे अब भी मायके में ही रहती हैं। शारीरिक रूप से वे ससुराल में होती हैं, लेकिन मानसिक रूप से वे अपने मायके में खोई रहती हैं। महिलाओं की यह मनोदशा (मिज़ाज) एक अवास्तविक (unrealistic) मनोदशा है। इस अवास्तविक मनोदशा की भारी क़ीमत यह है कि वे अनावश्यक रूप से अपने ससुराल में परेशान रहती हैं और कभी शांतिपूर्ण जीवन नहीं जी पातीं।

महिलाओं में इस अवास्तविक मिज़ाज की असल ज़िम्मेदारी उनके माता-पिता पर है। माता-पिता अपने प्यार के कारण ऐसी बातें करते हैं, जिससे उनकी बेटी को नए जीवन की चेतना नहीं मिल पाती। माँ-बाप अपनी बेटी के साथ प्यार के नाम पर ऐसा करते हैं, लेकिन आख़िर में वह दुश्मनी होती है। माँ-बाप तो कुछ समय के बाद इस दुनिया से चले जाते हैं, लेकिन अपनी बेटी को हमेशा के लिए एक समस्या के साथ छोड़ जाते हैं।

मैं एक पिता का हाल जानता हूँ। शादी के बाद जब उन्होंने अपनी बेटी को विदा किया, तो उन्होंने अपनी बेटी से कह दिया कि जहाँ तुम जा

रही हो, वही अब तुम्हारा घर है। वहाँ के माँ-बाप अब तुम्हारे माँ-बाप हैं। हम तुम्हारे लिए दुआ करते रहेंगे, लेकिन इस बात को समझ लो कि अब तुम्हारा घर भी बदल गया है और तुम्हारे माँ-बाप भी। पिता की यह सलाह उनकी बेटी के लिए बहुत काम की साबित हुई। ससुराल आते ही उन्होंने ससुराल को अपना घर बना लिया। उसके बाद उन्हें ससुराल में जीवन की वे सारी खुशियाँ मिलीं, जो पहले उन्हें अपने घर में मिली हुई थीं।

जीवन में सफलता का रहस्य यथार्थवाद या हक़ीकत-पसंदी (realism) है। इसी तरह जीवन में सभी समस्याओं का कारण अवास्तविक दृष्टिकोण (unrealistic viewpoint) है। अगर कोई महिला या पुरुष इस रहस्य को समझ ले, तो वह ज़रूर ही अपने जीवन को सुखमय बनाने में सफल होंगे।

अप्राकृतिक इच्छा

प्रसिद्ध भारतीय गायक मोहम्मद रफ़ी (निधन : 1980) का एक गीत इतना लोकप्रिय हुआ कि वह हर माता-पिता के दिल की धड़कन बन गया। कहा जाता है कि जब मुहम्मद रफ़ी ने इसे गाया था, तो वे ख़ुद भी बहुत प्रभावित हुए और रो पड़े थे। इस गाने में पिता अपनी बेटी को विदा करते हुए कुछ ऐसा कहता है। यहाँ इसका एक हिस्सा दिया जा रहा है—

बाबुल की दुआएँ लेती जा, जा तुझको सुखी संसार मिले,
मायके की कभी ना याद आए, सुसराल में इतना प्यार मिले।

यह बात प्रकृति के नियम के विरुद्ध है। आज की दुनिया में किसी भी लड़के या लड़की को हमेशा इस तरह 'सुख और प्यार' नहीं मिल

सकता। ऐसी हालत में इस तरह के सुख और प्यार को पति-पत्नी के लिए सफल जीवन का मानक बताना उनके लिए नाइंसाफ़ी है, क्योंकि इसका परिणाम दोनों में एक अवास्तविक ज़हन बनाता है और इस संसार में अवास्तविक मन से सफल वैवाहिक जीवन जीना किसी के लिए भी संभव नहीं।

इस अप्राकृतिक बात का परिणाम यह होता है कि माता-पिता और उनकी बेटी दोनों हमेशा इस भावना के साथ जीते हैं कि उनकी बेटी की शादी ग़लत हो गई। दोनों इस नकारात्मक (negative) भाव में जीते हैं और उसी नकारात्मक भाव में मर जाते हैं। अगर लोग जीवन की हक़ीक़त को जानें, तो माता-पिता अपनी बेटी के बारे में अप्राकृतिक इच्छाएँ करने की बजाय उसे एक नए जीवन के लिए तैयार करें और ख़ुद लड़की जब नए हालात में पहुँचे, तो उसे सकारात्मक मन (positive attitude) से ले। वह नई परिस्थितियों को प्रकृति की चुनौती (challenge) समझे और अपनी नई परिस्थितियों में अपने ईश्वर द्वारा प्रदान क्षमताओं का उपयोग करके अपने लिए एक सफल जीवन बनाए।

जीवन एक चुनौती है— महिला के लिए भी और पुरुष के लिए भी। जो लोग इस हक़ीक़त को जानते हैं, वे चुनौती को प्रगति की सीढ़ी मानेंगे और उस पर चढ़कर जीवन के ऊँचे स्तर पर पहुँचेंगे। सुख भौतिक राहत का नाम नहीं है, सुख तो यह है कि व्यक्ति अपनी परिस्थितियों से तालमेल (adjustment) का रहस्य जान ले।

मायके और सुसराल में अंतर

लड़की जब अपने मायके में होती है, तो वह उन लोगों के साथ होती है, जिनसे उसके ख़ून के रिश्ते (blood relation) होते

हैं। इस ख़ून के रिश्ते की वजह से ऐसा होता है कि मायके में उसे एकतरफ़ा प्यार के माहौल में जीने को मिलता है। मायके में लड़की के लिए यह माहौल होता है कि तुम कुछ न करो, तब भी तुम्हें सब कुछ मिलता रहेगा।

ससुराल का मामला बिलकुल अलग होता है। ससुराल में लड़की को ग़ैर-ख़ूनी रिश्तों के बीच रहना पड़ता है। मायके का कल्चर अगर 'बिना दिए पाने पर' आधारित था, तो ससुराल का कल्चर 'दोगे तो पाओगे' होता है। अगर नहीं दिया, तो तुम्हें कुछ भी नहीं मिलेगा।

आम तौर पर लड़कियाँ मायके और ससुराल के इस फ़र्क़ को नहीं समझ पातीं, इसलिए वे हमेशा एक अवास्तविक भावना में रहती हैं। वे मायके को अच्छा और अपने ससुराल को इसकी तुलना में बुरा समझती हैं। यह स्वभाव महिलाओं में आम है। इसका नुक़सान सबसे ज़्यादा ख़ुद महिलाओं को भुगतना पड़ता है। अपने इस मिज़ाज के कारण वे अपने पति और ससुरालवालों के साथ गहरा संबंध स्थापित नहीं कर पातीं।

विधाता ने हर महिला और पुरुष को विशिष्ट क्षमताओं के साथ पैदा किया है। इस दुनिया में हर महिला और पुरुष के लिए कोई बड़ा रोल भी तय किया है। इस रोल के लिए ज़रूरी है कि महिला अपने नए रिश्तेदारों के साथ मज़बूत संबंध बनाए, लेकिन अकसर महिलाएँ अपने ससुरालवालों के साथ इस संबंध को स्थापित नहीं कर पातीं, जो उनके निर्माता ने उनके लिए तय किया है। इस दुनिया में किसी भी बड़े रोल के लिए एक सामूहिक प्रयास (collective effort) आवश्यक है। घर एक ऐसी संस्था है, जहाँ कोई अपने प्रयास से एक बड़ा काम कर सकता है, लेकिन यह बड़ा काम उसी घर के लोग कर पाएँगे, जो अपने घर को सही अर्थों में एक सामूहिक संस्था बनाते हैं।

हक़ीक़त यह है कि एक औरत के लिए उसका ससुराल भी उसी तरह उसका अपना घर होता है, जिस तरह उसका मायका उसका अपना घर था।

एक अवलोकन

अमेरिका के एक सफ़र में मुझे एक अमेरिकी मुसलमान के घर में कुछ दिन रहने का अवसर मिला। उस मुसलमान की शादी एक ऐसी महिला से हुई थी, जो पाकिस्तान में पैदा हुई थी। वह पूरी तरह से पाकिस्तान में पली-बढ़ी थी। शादी के बाद वह अमेरिका चली आई और वहीं अपने पति के साथ रहने लगी।

एक दिन ऐसा हुआ कि आदमी अपनी जॉब पर बाहर चले गए। उसी समय वह महिला मुझसे मिलने के लिए आई। ज़ाहिर तौर पर वह मुझसे सलाह लेना चाहती थी, लेकिन मेरे कमरे में आते ही वह रोने लगी। वह कुछ न कह सकी और उसी हाल में वापस चली गई। अगले दिन उसने बताया कि मेरे पति मुझसे ख़ुश नहीं हैं। मैं सोचती हूँ कि मुझे यहाँ से वापस अपने माता-पिता के पास चले जाना चाहिए।

मैंने इस मसले पर काफ़ी विचार किया और पूरे मामले को समझने की कोशिश की। अंत में मुझे पता चला कि इस मामले का सही कारण महिला के माता-पिता की नादानी है। मामला यह था कि महिला के माता-पिता ने उसे पाकिस्तान में लाड़-प्यार से रखा, कभी घर का काम नहीं करने दिया। उन्हें घर के काम-काज करने या घर सँभालने का कोई प्रशिक्षण अपने मायके में नहीं मिला। इसके बाद उनके माता-पिता ने उनकी शादी अमेरिका में रहने वाले एक मुसलमान से कर दी। इस

मुसलमान में कोई नैतिक बुराई नहीं थी, बल्कि यह व्यावहारिक पहलू उसके जीवन में दुख का कारण बना।

भारत और पाकिस्तान में घर के काम करने के लिए नौकर आसानी से मिल जाते हैं, इसलिए यहाँ के माता-पिता घर का सारा काम नौकरों से करवाते हैं और अपनी बेटी को कोई काम नहीं करने देते, लेकिन अमेरिका की ज़िंदगी बिलकुल अलग है। अमेरिका में घरेलू नौकर नहीं मिलते, इसलिए यहाँ की महिलाओं को घर का सारा काम ख़ुद ही करना पड़ता है। दोनों देशों के बीच का यही अंतर उसके लिए परेशानी का सबब बन गया। उसके माता-पिता ने उसे घर का काम करने की आदत नहीं डाली, जबकि अमेरिका में वह मजबूर थी कि घर का सारा काम ख़ुद ही करे। माता-पिता की इस नासमझी ने इस महिला की ज़िंदगी को उसके लिए मुसीबत बना दिया।

माँ का ग़लत रोल

एक माँ का अपने बच्चों के साथ गहरा भावनात्मक बंधन होता है। इसका परिणाम आम तौर पर यह होता है कि बच्चे के मामले में माँ की भावनाएँ उसकी अक़्ल पर छा जाती हैं। औलाद के मामले में वह अपनी अक़्ल से नहीं, बल्कि भावनाओं से काम लेती है। उसकी सबसे ज़्यादा कोशिश यह होती है कि वह अपने बच्चों की हर इच्छा को पूरा करती रहे। हालाँकि एक माँ की हैसियत से अपने बच्चों के लिए उनका सबसे बड़ा काम यह है कि अपनी औलाद को एक सफल इंसान बनाने की कोशिश करें। हर बच्चा प्रकृति पर पैदा होता है। जन्म से हर बच्चा 'मिस्टर नेचर' होता है, लेकिन बाद की कंडीशनिंग के करण हर बच्चा अपने वास्तविक स्वरूप से दूर चला जाता है, यहीं पर माँ को अपनी

रचनात्मक भूमिका निभानी होती है। उसे बच्चे की इच्छाओं को पूरा करने का साधन नहीं बनना है, बल्कि बच्चे को हर तरह के भटकाव से बचाने और उसे उसके वास्तविक स्वरूप पर रखना है।

माँएँ अपने बढ़े हुए प्यार की वजह से अपने बच्चों की हर इच्छा पूरी करना चाहती हैं। नतीजा यह होता है कि बच्चा इस तरह बड़ा होता है कि उसकी हर इच्छा पूरी होनी चाहिए। फिर जब यह बाहर की दुनिया में आता है, तो उसे यहाँ विपरीत अनुभव होता है। इस विरोधाभास का नतीजा बहुत बुरा होता है। इस प्रकार के युवा जाने या अनजाने में यह समझने लगते हैं कि घर के लोग बहुत अच्छे होते हैं और बाहर के सभी लोग बहुत बुरे लोग हैं। घर और बाहर के जीवन के बीच का अंतर ही मुख्य कारण है, जिसने आज तमाम इंसानों को नकारात्मक सोच वाला इंसान बना दिया है। आज हर व्यक्ति दूसरों से खुली या छुपी नफ़रत करता है। इस स्थिति की सबसे ज़्यादा ज़िम्मेदारी उन महिलाओं की है, जो माँ के रूप में अपनी भूमिका निभाने में असफल रहीं। विधाता ने तो हर माँ के दिल में अपने बच्चों के लिए बेपनाह मुहब्बत रखी है। यह प्रेम इसलिए था कि माताएँ हर मुश्किल का सामना करते हुए अपनी औलाद की सही ढंग से तरबियत करें, लेकिन माताओं ने अपने स्वाभाविक प्रेम को केवल लाड़-प्यार तक सीमित कर दिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि सारी इंसानियत बिगड़े हुए इंसानों का जंगल बन गई।

बच्चों की धार्मिक शिक्षा

अकसर माता-पिता मुझसे पूछते हैं कि मौजूदा ज़माने में बच्चों की धार्मिक शिक्षा के लिए क्या किया जाए। मेरा हमेशा एक ही जवाब होता है— बच्चों को तरबियत (upbringing) देने से पहले ख़ुद को ट्रेन कर

लीजिए। मौजूदा ज़माने में बच्चों के बिगड़ने का मुख्य कारण बाहरी वातावरण नहीं, बल्कि घर का आंतरिक वातावरण है। घर का आंतरिक माहौल कौन बनाता है, माता-पिता ही घर के आंतरिक माहौल का निर्माण करते हैं। जब तक घर का आंतरिक माहौल सही मायने में आध्यात्मिक नहीं बनाया जाए, तब तक बच्चों के अंदर कोई सुधार नहीं हो सकता।

मौजूदा ज़माने का वास्तविक बिगाड़ माल है। आजकल हर आदमी ज़्यादा-से-ज़्यादा दौलत कमा रहा है। माता-पिता के पास इस धन का केवल एक ही उपयोग है और वह है— घर में सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं को इकट्ठा करना और बच्चों की सभी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करना। इस ज़माने में यह कल्चर इतना आम है कि शायद कोई भी घर इससे बचा हुआ नहीं है।

माता-पिता के इस रवैये ने हर घर को भौतिकवाद का कारख़ाना बना दिया है। सभी माता-पिता अपने बच्चों में जाने-अनजाने भौतिकवादी दिमाग़ बनाने के लीडर बने हुए हैं। इसके साथ ही सभी माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे परलोक की जन्नत से वंचित न रहें। इस मिज़ाज के बारे में एक उर्दू शायर ने कहा था— "रंद के रिंद रहे, जन्नत हाथ से न गई।"

यह सिर्फ़ एक ख़याली सोच (wishful thinking) है, जो कभी पूरी नहीं होगी। एक कहावत है— "हाथी की दुम से पतंग बाँधना।" मौजूदा ज़माने के माता-पिता एक ओर तो अपने बच्चों को 'भौतिक हाथी' बनाते हैं। दूसरी ओर वे चाहते हैं कि उस हाथी की दुम में दीन-धर्म की पतंग बाँध दी जाए, मगर ऐसी पतंग का हाल केवल यह होने वाला है कि हाथी एक बार अपनी पूँछ को झटका देगा और पतंग उड़कर बहुत दूर चली जाएगी। माता-पिता को चाहिए कि अगर वे अपने बच्चों को बौद्धिक बनाना चाहते हैं, तो वे उसका मूल्य चुकाएँ, वरना वे इस तरह की दोग़ली बात करना भी छोड़ दें।

लाड़-प्यार का नुक़सान

लड़की के माता-पिता की सोच आम तौर पर यह होती है कि जब उनकी बेटी ससुराल जाएगी, तो वहाँ उसे घर का सारा काम करना पड़ेगा, इसलिए वे चाहते हैं कि अपने यहाँ वे अपनी लड़की से कोई काम न करवाएँ। हालाँकि जो लड़की अपने मायके में काम करना न सीखे या काम की आदी न बने, वह अचानक ऐसी नहीं हो जाएगी कि वह ज़ोरदार तौर पर ससुराल पहुँचते ही सारे काम करने लगे। माता-पिता के पालन-पोषण का यह तरीक़ा एक झूठा लाड़-प्यार है, न कि सच्चे प्यार का तरीक़ा।

मैंने ऐसे माता-पिता देखे हैं, जो लड़की के पैदा होते ही उसके लिए दहेज़ तैयार करना शुरू कर देते हैं, लेकिन यह सिर्फ़ नादानी है। अनुभव यह बताता है कि कोई भी दहेज़ किसी लड़की के जीवन में काम नहीं आता। सब कुछ केवल एक प्रदर्शनी है, वह किसी भी स्तर पर एक लड़की के जीवन के निर्माण का साधन नहीं है। निर्माण का संबंध तैयारी से है, प्रदर्शनी से नहीं।

माता-पिता का मुख्य काम दहेज़ तैयार करना नहीं है, बल्कि उनका मुख्य काम लड़की को ख़ुद तैयार करना है। उन्हें अपनी बेटी को उच्च शिक्षा दिलानी चाहिए। उन्हें अपनी बेटी को अच्छी तरह से प्रशिक्षित करना चाहिए। उन्हें अपनी बेटी को व्यावहारिक जीवन के संस्कार सिखाने चाहिए। उन्हें अपनी बेटियों में उस बौद्धिक प्रवृत्ति को विकसित करना चाहिए, जो सफल सामाजिक जीवन के लिए आवश्यक है।

लाड़-प्यार (pampering) एक 'कल्चर' का नाम है। यह हर मामले में व्यक्त होता है। मसलन— बच्चे की हर इच्छा पूरी करना, बच्चे की हर ग़लती को यह कहकर टाल देना कि वह अभी बच्चा है, बड़ा होने पर ठीक हो जाएगा। अपने बच्चों को निर्दोष (मासूम) समझकर हर

मामले में दूसरों को ज़िम्मेदार ठहराना। खाने-पीने के मामले में बच्चे की हर माँग को पूरा करना, भले ही उसकी सेहत ख़राब हो जाए। बच्चे को कोई काम न करने देना। हमेशा अपने बच्चे को अच्छा समझना और दूसरों को ग़लत बताना। अपने बच्चे में आराम करने की आदत डालना। अपने बच्चों को जीवन के संघर्ष से दूर रखना। नक़ली प्यार के लिए बच्चों के लिए हर फ़ैशन आइटम उपलब्ध कराना। उन्हें बचपन से ही फ़ैशन का आदी बनाना आदि।

माता-पिता की भूमिका

मेरे अनुभव के अनुसार शादी के असफल होने का मुख्य कारण लड़की के माता-पिता की ग़लत भूमिका है। मैंने पाया है कि माता-पिता शादी के समय ख़ूब धूम-धाम मचाते हैं। अपने बजट से ज़्यादा पैसा ख़र्च करते हैं, यहाँ तक कि फ़ालतू ख़र्च करने का काम भी करते हैं, जिसे क़ुरआन में 'शैतानी काम' (अल-इसरा, 27) बताया गया है, लेकिन लड़की के माता-पिता के लिए एक और महत्वपूर्ण कार्य है, जो वे बिलकुल नहीं करते और वह है लड़की को इस प्रकार तैयार करना, ताकि वह शादी के बाद एक ख़ुशहाल ज़िंदगी जी सके। लगभग सभी माता-पिता ऐसी स्थिति में होते हैं, जहाँ वे अपनी लड़कियों को बहुत लाड़-प्यार करते हैं, लेकिन जब सच्चे प्यार की बात आती है, तो वे असफल हो जाते हैं।

माता-पिता को यह जानना चाहिए कि वे अपनी बेटी को हमेशा अपने पास नहीं रख सकते। एक समय आएगा, जब वे उसकी शादी अपने परिवार के बाहर के व्यक्ति से कर देंगे और लड़की को उसके साथ रहने के लिए भेज देंगे। यह एक बिलकुल साफ़ हक़ीक़त है कि

जिस माहौल में एक लड़की अपने माता-पिता के साथ रहती है, वह उस माहौल से पूरी तरह अलग होती है, जिसमें वह अपने पति के साथ रहती है। यह भी एक साफ़ हक़ीक़त है कि एक लड़की का अपने माता-पिता के साथ रहना अस्थायी (temporary) होता है और अपने पति के साथ स्थायी (permanent)। ऐसे में माता-पिता को चाहिए कि वे अपनी बेटी को ऐसे संस्कार सिखाएँ, जो आगे चलकर उसके काम आएँ। वे उसे ऐसी ट्रेनिंग दें कि वह पति को जीवनसाथी बनाए, न कि केवल माता-पिता की साथी बनकर रहे।

मेरा अनुभव है कि 99 प्रतिशत से अधिक माता-पिता इस मामले में अपनी ज़िम्मेदारी नहीं निभा पा रहे हैं। उनकी इस लापरवाही की सज़ा उनकी लड़की को बाद के जीवन में जीवनभर भुगतनी पड़ती है। उदाहरण के लिए, एक महिला अपनी अवास्तविक परवरिश के कारण हमेशा अपने मायके को अपना घर समझती है, हालाँकि सही यह है कि उसे शादी के बाद अपने ससुराल को ही अपना घर मानना चाहिए। इसी तरह शादी के बाद भी माता-पिता अपनी बेटी पर अपना हक़ समझते हैं और बेवजह दख़ल-अंदाज़ी करते रहते हैं। माता-पिता का यह रवैया प्यार के नाम पर दुश्मनी है। वह सिर्फ़ नासमझ दोस्ती है और नासमझ दोस्ती हमेशा उल्टा नतीजा पैदा करती है।

एक घटना

एक दिन मेरे पास भारत के एक शहर से एक टेलीफ़ोन आया। एक मुसलमान महिला फ़ोन पर बात कर रही थीं। उन्होंने कहा कि शादी के बाद मेरी बहन और उनके पति के बीच ऐसे मतभेद पैदा हो गए हैं, जो सुलझ नहीं सके। अब फ़ाइनली यह तय किया गया है कि दोनों के बीच तलाक़

करा दी जाए। आज शाम को तलाक़नामे पर दस्तख़त होने वाले हैं। कृपया दुआ करें कि तलाक़ के बाद मेरी बहन की ज़िंदगी ख़ुशहाल रहे।

मैंने कहा कि तुम अपनी बहन को मुझसे बात करने के लिए कहो। उसके बाद मैंने उनकी बहन से फ़ोन पर बात की। मैंने पूछा कि तुममें और तुम्हारे पति में क्या झगड़ा है? उन्होंने कुछ बातें कहीं। मैंने कहा कि आप जो कह रही हैं, वह महत्वपूर्ण नहीं है। यह असहमति का मसला नहीं है, बल्कि यह जज़्बाती होने की समस्या है। कुछ बातों को लेकर आप बेवजह जज़्बाती हो गई हैं। अपने जज़्बातों पर नियंत्रण रखें। इस विचार को ख़त्म कर दीजिए कि "मैं उनकी बात क्यों मानूँ, उन्हें मेरी बात माननी चाहिए।"

मैंने उन्हें कुछ घटनाएँ सुनाईं और उनसे कहा कि जीवन दोतरफ़ा (bilateral) आधार पर नहीं चलता, बल्कि जीवन हमेशा एकतरफ़ा (unitaleral) आधार पर चलता है। आप इस मामले में कोई अपवाद (exception) नहीं हैं। इस सिद्धांत को क़ुरआन में 'क़व्वामियत' (अन-निसा, 34) से बताया गया है यानी जिस प्रकार हर कंपनी में और हर सामूहिक संगठन में एक इंतिज़ाम करने वाला बॉस होता है, इसी तरह घर में भी एक आदमी को बॉस का दर्जा दिया जाना चाहिए। यह एक प्राकृतिक सिद्धांत है। यह लैंगिक समानता (gender equality) या लैंगिक असमानता से संबंधित नहीं है। ऐसा न करने पर घर में अनुशासन नहीं होगा और अनुशासन के बिना किसी भी संस्थान में विकास नहीं हो सकता।

उक्त महिला ने मेरी बात मान ली और साथ रहने का फ़ैसला कर लिया। उसने तलाक़ की माँग वापस ले ली और अपने पति से कहा कि मैं आपको अपना बॉस मानती हूँ और बिना किसी शर्त के आपके साथ रहना चाहती हूँ। परिणाम सकारात्मक रहा। अब वे दोनों अपने घर में ख़ुशहाल ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं।

बराबरी में विवाह

आम तौर पर यह समझा जाता है कि शादी हमेशा कुफ़ू (class) में होनी चाहिए, ग़ैर-कुफ़ू में नहीं यानी बराबरी के रिश्तों में शादी हो तो दोनों के बीच आसानी के साथ निबाह होगा और अगर आर्थिक व पारिवारिक दृष्टि से असमानता हो तो पति और पत्नी दोनों हमेशा चिंता में रहेंगे, लेकिन यह सिर्फ़ एक धारणा है। नतीजे के हिसाब से यह देखा गया है कि बराबरी वालों के बीच शादी में उतने ही मसले होते हैं, जितने ग़ैर-बराबरी वालों के बीच। सच तो यह है कि सफल शादी का संबंध बराबरी या ग़ैर-बराबरी से नहीं है, बल्कि इस बात से है कि वे वैवाहिक जीवन गुज़ारने की कला जानते हैं कि नहीं।

आम तौर पर यह माना जाता है कि पति-पत्नी में से एक स्मार्ट है और दूसरा स्मार्ट नहीं है। अगर एक पूर्व में और दूसरा पश्चिम में शिक्षित हुआ है या एक अमीर परिवार से है और दूसरा ग़रीब परिवार से है या एक गाँव से है और दूसरा एक शहर से है, एक गोरा है और दूसरा काला है, एक बड़ा है और दूसरा छोटा है, आदि प्रकार की भिन्नता पाई जाए, तो शादी का असफल होना तय है।

यह एक ग़लत धारणा है। यह एक मालूम हक़ीक़त है कि घर एक पूर्ण संस्था (institute) की तरह है। एक सामान्य संस्था की तरह घर में भी विभिन्न विभाग होते हैं। ऐसी असमानता या ग़ैर-बराबरी को मैनेज करने का सबसे आसान तरीक़ा पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए काम के विभाजन (division of labour) के सिद्धांत को अपनाना है। हर एक को अपनी क्षमता के अनुसार एक क्षेत्र को ले लेना चाहिए और अपनी क्षमता के अनुसार उसे स्वतंत्र रूप से चलाना चाहिए।

बँटवारे के इस सिद्धांत की सफलता के लिए केवल एक ही शर्त है और वह यह कि दोनों पक्ष यह बात तय कर लें कि वे अपने-अपने क्षेत्र तक ही सीमित रहें और एक-दूसरे के क्षेत्र में हस्तक्षेप न करें। ग़ैर-बराबरी की शादी का समाधान काम का बँटवारा (division of labour) है। इसके अलावा और कोई फ़ॉर्मूला इस समस्या का समाधान नहीं है।

संयुक्त परिवार

वैवाहिक जीवन अपनाने के बाद पति-पत्नी के सामने आने वाली समस्याओं में से एक यह है कि क्या संयुक्त परिवार में रहना है या अलग से अपना घर बनाना है। यह मुद्दा शरीयत का मुद्दा नहीं है। दोनों विधियाँ समान रूप से मान्य हैं, लेकिन मेरे अनुभव के अनुसार संयुक्त परिवार पद्धति किसी भी अन्य विधि की तुलना में अधिक लाभदायक है, अगर पति-पत्नि जागरूक और बुद्धिमान हैं।

हर घर की कई ज़रूरतें होती हैं। एक सफल जीवन के निर्माण के लिए हमेशा अलग-अलग आवश्यकताओं को पूरा करना पड़ता है। यह जीवन का वह पहलू है, जो एक संयुक्त परिवार को एक ग़ैर-संयुक्त परिवार की तुलना में अधिक उपयोगी बनाता है। एक ग़ैर-संयुक्त परिवार में शुरू में केवल दो सदस्य होते हैं— एक महिला और एक पुरुष। इसके बाद इसमें बच्चों की वृद्धि होती है। इसकी तुलना में संयुक्त परिवार में अनेक महिला-पुरुष होते हैं, स्वाभाविक रूप से इन महिला-पुरुषों में भिन्न-भिन्न क्षमताएँ होती हैं। यह घटना संयुक्त परिवार के लिए एक बहुत अच्छा पहलू है, क्योंकि इसी के आधार पर यह संभव हो पाता है कि परिवार के प्रत्येक सदस्य को सारा काम न करना पड़े, अपितु सबके सहयोग से सभी कार्य होते रहें।

संयुक्त परिवार पद्धति अपने परिणामों में बहुत उपयोगी है, लेकिन इसकी एक क़ीमत है और वह क़ीमत है— पीछे हटने की भावना यानी जब भी कोई विवाद हो, तो आप तुरंत पीछे हट जाएँ, किसी भी परिस्थिति में आपको टकराव का रुख़ नहीं अपनाना है। संयुक्त परिवार की सफलता की यही एकमात्र शर्त है। जिन लोगों में इस शर्त को पूरा करने का साहस नहीं है, उनके लिए शादी के बाद ग़ैर-संयुक्त परिवार की पद्धति को अपनाना ही बेहतर है।

जीवन में हर आदमी को दो में से एक चीज़ का त्याग करना पड़ता है— या तो वह अपने लाभ के लिए अपने अहंकार का त्याग करता है या वह अपने अहंकार को बचाने के लिए लाभ से ख़ुद को वंचित करता है। किसी को दोनों एक ही समय में मिलने वाला नहीं।

सास-बहू की समस्या

सास-बहू की पारंपरिक समस्या लगभग हर घर में पाई जाती है, लेकिन यह वास्तविक समस्या नहीं है। यह समस्या एक अप्राकृतिक मनोविज्ञान के तहत उत्पन्न हुई। एक मनोवैज्ञानिक समस्या हमेशा विचार के स्तर पर उत्पन्न होती है और विचार के स्तर पर इसे बहुत आसानी से समाप्त किया जा सकता है।

जैसे एक मकान है, उसमें चारपाई पड़ी है। इस चारपाई पर माँ बैठी है। उस समय अगर बेटी वहाँ आ जाए और वह सच्चे मन से लेट जाए, तो कोई परेशानी नहीं होगी, लेकिन अगर ऐसा हो कि माँ पूरी चारपाई पर बैठी हो और बहू आकर लेट जाए, तो ऐसी घटना तुरंत समस्या बन जाएगी। अब कहा जाएगा कि बहू बहुत बदतमीज़ है। उसके माता-पिता ने उसे अच्छे संस्कार नहीं दिए आदि।

इस स्थिति की ज़िम्मेदारी सास और बहू दोनों पर आती है। अगर सास अपनी बहू को अपनी बेटी की तरह माने और बहू अपनी सास को अपनी माँ की तरह माने, तो यह सारी समस्या ख़त्म हो जाएगी और सास व बहू उसी तरह ख़ुशगवार माहौल में रहेंगे, जैसे माँ-बेटी ख़ुशगवार माहौल में रहती हैं।

प्रकृति की यह व्यवस्था है कि हर बेटी को अंततः बहू बनना पड़ता है और हर माँ को सास बनकर घर में रहना पड़ता है। यह निर्माता द्वारा बनाई गई एक प्राकृतिक प्रणाली है। हर महिला और हर लड़की को इस प्रणाली के अनुकूल होना चाहिए। जो महिला इस व्यवस्था के अनुकूल नहीं होती, वह मानो अपने विधाता से विद्रोह कर रही है।

महिला की महान भूमिका

अंग्रेज़ी भाषा में एक प्रसिद्ध कहावत है—

प्रत्येक महान कार्य के आरंभ में एक महिला होती है।

There is a woman at the beginning of all great things.

इस मामले का एक उदाहरण नैंसी इलियट एडिसन हैं, जो प्रसिद्ध वैज्ञानिक थॉमस अल्वा एडिसन की माँ थीं। उनकी मृत्यु 1871 में हुई थी। वे एक स्कूल टीचर थीं। उन्होंने थॉमस अल्वा एडिसन का नाम वैज्ञानिकों की सूची में जोड़ा, जिनकी खोजों की संख्या हज़ार से अधिक है।

एडिसन को जन्मज़ात कमज़ोरी थी। वे बहुत कम सुनते थे, जिसकी वजह से उनकी औपचारिक शिक्षा पूरी नहीं हो सकी, लेकिन एडिसन की माँ अपने बच्चे के जाहिल रहने के लिए तैयार नहीं थीं। उन्होंने

एडिसन की शिक्षा का भार सँभाला। उन्होंने अपने घर को स्कूल बना लिया। उन्होंने अपने घर में ही सभी शैक्षिक व्यवस्थाएँ कीं, जब तक कि एडिसन बिना स्कूली शिक्षा के एक शिक्षित व्यक्ति नहीं बन गए।

एडिसन ने अपने जीवन में अपनी माँ की भूमिका को इन शब्दों में स्वीकार किया—

उन्होंने मुझमें ज्ञान के प्रति प्रेम और ज्ञान प्राप्त करने के महत्व की भावना पैदा की।

She instilled in me the love and the purpose of learning.

इस तरह का उच्च चरित्र हर महिला की क़िस्मत में होता है। हर महिला अपने निर्माता द्वारा दी हुई इस भूमिका के लिए पूरी तरह सुसज्जित पैदा होती है। इंसानियत के निर्माण में हर महिला अहम भूमिका निभा सकती है। बस शर्त यह है कि वह ईश्वर की दी हुई अपनी क्षमता को समझे और फिर उसका पूरे संकल्प के साथ उपयोग करे। हालाँकि इस प्रकार की भूमिका के लिए धैर्य आवश्यक है। प्रतिभा निर्माता द्वारा दी जाती है, लेकिन धैर्य की क़ीमत सभी को चुकानी पड़ती है। कोई भी महिला जो इस क़ीमत का भुगतान करती है, वह अत्यधिक रचनात्मक भूमिका निभा सकती है, जैसा कि एडिसन की माँ ने किया था।

एक अच्छा समाज या एक अच्छा वैवाहिक जीवन इस बात पर निर्भर नहीं करता कि पति को बिलकुल अपनी पसंद की पत्नी मिले या पत्नी को बिलकुल अपनी पसंद का पति मिले।

सच तो यह है कि प्रकृति के नियम के अनुसार ऐसा हो नहीं पाता। एक सफल वैवाहिक जीवन का रहस्य जीवनसाथी के साथ अपनी पसंद के ख़िलाफ़ एडजस्ट करना है, नापसंद में पसंद का पहलू ढूँढना है।

महिलाएँ और पुरुष आम तौर पर एक आम समस्या से पीड़ित होते हैं। हर किसी को लगता है कि उन्हें जो पार्टनर मिला है या जो जीवन मिला है, वह उनकी चाहत से कम है। जो जीवन उसे मिला है, उससे असंतुष्ट होकर प्रत्येक आदमी दूसरे कल्पित जीवन की तलाश में रहता है। यह अवधारणा अत्यधिक अवास्तविक (unrealistic) है। एक महिला या एक पुरुष, जो अपने मन में आदर्श जीवन लिये हुए है, अगर वह उसे मिल भी जाए, तब भी वह असंतुष्ट ही रहेगा।

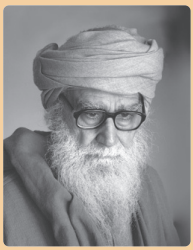

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान 'सेंटर फॉर पीस एंड स्प्रिचुएलिटी', नई दिल्ली के संस्थापक थे। मौलाना का मानना था कि शांति और आध्यात्मिकता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं : आध्यात्मिकता शांति की आंतरिक संतुष्टि है और शांति आध्यात्मिकता की बाहरी अभिव्यक्ति। मौलाना ने शांति और आध्यात्मिकता से संबंधित 200 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं। विश्वशांति में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त थी।

CPS International
centre for peace and spirituality
www.cpsglobal.org
info@cpsglobal.org

Goodword
www.goodwordbooks.com
info@goodwordbooks.com

ISBN: 978-93-94886-56-8
9 789394 886568